प्रसन्नता का रहस्य

तथा

अन्य प्रवचन

लेखक :

सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स नं० ३८१५
नई दिल्ली-११००४९

प्रथम संस्करण :
१९८१

मुद्रक :
प्रिन्ट इन्डिया
ए-३८/२, फेस I इन्डस्ट्रीयल एरिया,
माया पुरी, नई दिल्ली-११००६४.

SECRET OF HAPPINESS
AND
Other Sermons

By

Sunny David

Published by :
Church of Christ
Post Box 3815
New Delhi-110049

Table Of Sermons

		Page
1.	Secret Of Happiness	9
2.	Eternal Salvation	14
3.	Whose Will Are You Following ?	19
4.	Who Is First In Your Life ?	25
5.	"How Long Halt Ye Between Two Opinions ?	30
6.	What Does It Mean To Follow Jesus?	35
7.	God Means What He Says	40
8.	Two Kinds Of Faith	45
9.	Why Did Jesus Come ?	50
10.	"And IF I Be Lifted Up From The Earth"	55
11.	Christian Life	61
12.	The Need Of Authority.	66

रेडियो पर
सुनिये
सत्य सुसमाचार

प्रत्येक :

मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को रात को नौ बजे तथा रविवार को दिन में डेढ़ बजे ।

यह कार्यक्रम रेडियो श्रीलंका से १९, २५, तथा ४१ मीटर बैंड पर आप सुन सकते हैं ।

प्रचारक :

श्री सनी डेविड

अन्य उपलब्ध रचनाएं

१. यीशु के दृष्टान्त
२. बाइबल प्रवचन
३. वस्तुएं जो विशाल हैं
४. क्या यह सच है ?
५. ऐसा बड़ा उद्धार
६. मसीह के दावे
७. नए नियम के अनुसार
८. पुराने नियम के अनुसार
९. मसीही संदेश
१०. जीवन के वचन
११. यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे···
१२. हम किसके पास जाएं ?
१३. मुक्ति के संदेश
१४. बीस लघु रेडियो संदेश
१५. पन्द्रह प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
१६. मसीह का सुसमाचार
१७. सुसमाचार प्रवचन
१८. सुसमाचार बोनेवाला

परिचय

शताब्दियों से मनुष्य प्रसन्नता की खोज में लगा हुआ है। मनुष्य अपना सारा समय प्रसन्नता को प्राप्त करने में लगा देता है। वह जगत की भौतिक वस्तुओं को प्राप्त करता है। धन और मान् को प्राप्त करता है। परन्तु सच्ची प्रसन्नता उसे तब भी प्राप्त नहीं होती। सच्ची प्रसन्नता मनुष्य को केवल तभी मिलती है जब वह अपने परमेश्वर के साथ अपना सही सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। कितनी संतुष्टि मिलती है मनुष्य को इस बात से कि वह अपने सृजनहार के साथ सही सम्बन्ध रखता है। कितनी शान्ति मिलती है इस बात को जानकर कि मेरे पाप क्षमा हो चुके हैं। कितनी खुशी का अनुभव होता है यह जानकर कि मैं उस मार्ग पर चल रहा हूं जो मुझे स्वर्ग में ले जाएगा। सच्ची खुशी यही है। और यदि आपका जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार है तो आप इस दुखी संसार में भी प्रसन्न रह सकते हैं।

भाई सनी डेविड ने अपनी इस नई रचना में हमारा ध्यान उन वस्तुओं के ऊपर दिलाया है जिनसे मनुष्य को वास्तविक शांति और संतुष्टि और खुशी प्राप्त होती है। मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़नेवाला प्रत्येक व्यक्ति यह महसूस करेगा कि सच्ची प्रसन्नता मनुष्य को परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलकर ही मिलती है।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली-

प्रवचनों की सूची

		पृष्ठ
१.	प्रसन्नता का रहस्य	९
२.	सदाकाल का उद्धार	१४
३.	आप किसकी इच्छा पर चल रहे हैं ?	१९
४.	आप के जीवन में पहिला कौन है ?	२५
५.	"तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे ?"	३०
६.	यीशु के पीछे हो लेने का अर्थ क्या है ?	३५
७.	परमेश्वर जो कहता है वही उसका अर्थ होता है	४०
८.	दो प्रकार के विश्वास	४५
९.	यीशु क्यों आया ?	५०
१०.	"और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊंगा"	५५
११.	मसीही जीवन	६१
१२.	अधिकार की आवश्यकता	६६

प्रसन्नता का रहस्य

मित्रो:

हम सब वास्तव में बड़े ही भाग्यशाली हैं, क्योंकि आज हम एक ऐसे उन्नतिशील समय में रहते हैं जिसमें हमें नाना प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हैं। एक समय था जबकि लोगों को किसी दूसरे शहर में घटी किसी बात को जानने के लिये हफ्तों और महिनों का इन्तिज़ार करना पड़ता था। परन्तु आज हमें संसार भर की ख़बरें मिनटों में प्राप्त हो जाती हैं। हमें एक दिन भी प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, सिर्फ़ एक स्विच ऑन करने की आवश्यकता है और दुनिया भर के समाचार हमें मिल जाते हैं। एक समय था जबकि यीशु के सुसमाचार के प्रचारकों को बैल-गाड़ियों और खच्चरों पर सवार होकर प्रचार करने के लिये जाना पड़ता था। पहिली शताब्दि में यीशु के चेले अकसर किश्तियों और पानी के जहाज़ से सफ़र करके जाया करते थे। इस में उन लोगों को बड़ा समय बरबाद करना पड़ता था। परन्तु मैं आज एक मशीन के माध्यम से कुछ ही क्षणों में लाखों और करोड़ों लोगों से बातें कर सकता हूं। सचमुच में कितने भाग्यशाली हैं हम लोग। परन्तु अकसर हम अपनी आशीषों को गिनने के विपरीत अपनी कमियों और अपनी घटियों को गिनने लगते हैं। अकसर हम अपने आपको अभागे, अयोग्य और हीन् समझने लगते हैं। सुबह उठते ही परमेश्वर को एक नए दिन के लिये धन्यवाद देने के विपरीत हम उन वस्तुओं की चिन्ता करने लगते हैं जो हमारे पास नहीं हैं। हम उसके लिये धन्यवाद नहीं देते जो हमारे पास है, परन्तु जो हमारे पास नहीं है उसकी चिन्ता करके हम दुखी होते हैं। सच है

कि आज हम प्रसन्न नहीं हैं। सही है कि आज हम खुश नहीं हैं। क्योंकि हम अपनी बरकतों को नहीं गिनते पर अपनी कमियों और त्रुटियों का हिसाब लगाने लगते हैं। बहुत समय हुआ जब प्रभु यीशु ने लोगों के सामने एक प्रश्न रखकर उन से पूछा था, "तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है ?" (मत्ती ६:२७)। और वास्तव में यह सच है। हम चिन्ता करके अपने आप को नाश कर सकते हैं। परन्तु अपनी अवस्था में एक घड़ी भी नहीं बढ़ा सकते। हम चिन्ता करके अपने आप को खो सकते हैं, परन्तु अपनी हानि को लाभ में नहीं बदल सकते।

इसलिये हमें चाहिए कि हम अपनी घटियों को न देखकर उन बस्तुओं के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें जो हमारे पास हैं। इस सम्बन्ध में एक बड़ा ही अच्छा उदाहरण एक जगह हमें प्रभु यीशु के बारे में मिलता है। आप को शायद याद होगा कि एक बार यीशु ने पांच हज़ार लोगों को भोजन खिलाकर तृप्त किया था। कितना भोजन था यीशु के पास उन लोगों को खिलाने के लिये ? कुल पांच रोटी और दो मछलियां ! परन्तु यीशु ने क्या किया ? बाइबल का लेखक हमें बताता है, कि यीशु ने उसी थोड़े से भोजन को अपने हाथ में लेकर परमेश्वर को धन्यवाद दिया। कितना भोजन है आज आप के पास ? कितने कपड़े हैं आपके पास ? कितनी विद्या है आपके पास ? कितनी योग्यता है आपके पास ? शायद बहुत कम है। परन्तु क्या उसके लिये आप परमेश्वर के धन्यवादी हैं ?

आप सुंदर फूलों को देख सकते हैं, कुदरत की सुन्दरता को देख सकते हैं। आप पढ़ सकते हैं। परन्तु सोचिए उन सब लोगों के बारे में जो देख नहीं सकते, जिनकी आँखे नहीं है, जो अन्धे हैं। आप अपनी उंगलियों से अपने कपड़े को छूकर अनुभव कर सकते हैं। आप अपनी उंगलियों से कलम उठाकर लिख सकते हैं, और

अनेक अन्य काम कर सकते हैं। लेकिन फिर सोचये कि आज पृथ्वी पर कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनके पास उंगलियां और हाथ नहीं हैं। आप अपने स्कूल जा सकते हैं, अपने मित्रों के साथ खेलने जा सकते हैं, आप अपने काम पर जा सकते हैं। किन्तु फिर उन लोगों पर ध्यान करें जिनकी टांगें नहीं हैं। मैं परमेश्वर को बार—बार धन्यवाद देता हूं कि मैं अपनी जीभ की ताकत को इस्तेमाल कर सकता हूं, मैं बोल सकता हूं, आपको उपदेश दे सकता हूं, और परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह का सुसमाचार आप सब लोगों के पास पहुचा सकता हू। परन्तु मान लीजिये यदि मैं गूंगा जन्मा होता, यदि मुझे बोलने की शक्ति नहीं होती ? परन्तु तौभी हम जानते हैं, कि आज संसार में अनेक ऐसे लोग हैं जो बोलने में असमर्थ हैं। सो यह हमारे लिए कितनी बड़ी आशीष की बात है कि आप और मैं बोल सकते हैं।

किन्तु फिर सोचिए, कि आप और मैं परमेश्वर के आत्मिक स्वरूप पर बनाए गए हैं, अर्थात हम आत्मिक प्राणी हैं। और चाहे हम गूंगे, बहिरे, अन्धे और लंगड़े हों तौभी मृत्यु के द्वारा इस नाशमान् शरीर से अलग होकर एक दिन हम उस आत्मिक अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे जिसमें हम हमेशा तक बने रहेंगे। और न केवल यही, किन्तु इस बात पर भी विचार करें, कि यद्यपि हम पापी हैं हमने परमेश्वर की इच्छानुसार न चलकर उससे अपना सम्बन्ध तोड़ लिया है। परन्तु फिर भी परमेश्वर ने हम मनुष्यों से ऐसा प्रेम रखा, कि पाप से हमारा उद्धार करने के लिए और हमें अपने पास अपनी संगति में वापस ले आने के लिए, उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिए बलिदान कर दिया। सोचिए कि परमेश्वर ने हम से उस समय प्रेम रखा जब हम पापी थे, उसके बैरी थे। और ऐसा प्रेम, कि उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए स्वयं अपने पुत्र को हमारे लिये दे दिया ! फिर सोचिए, मसीह

यीशु के उन दुखों को जो उसने क्रूस के ऊपर आपके और मेरे लिये बर्दाशत किए। बाइबल में लिखा है, कि उसके ऊपर अत्याचार होता गया और वह सहता रहा और उसने अपना मुँह न खोला। (यशायाह ५३:७)। यद्यपि कि वह निर्दोष था, परन्तु उसने अपने आप को बेकसूर साबित करने के लिये भी अपना मुँह न खोला। क्योंकि वह जानता था कि वह अपने किसी अपराध के लिये नहीं परन्तु सारे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये परमेश्वर की इच्छा से दुख उठ रहा है। यही कारण है, कि जब वह क्रूस पर मरने के लिये चढ़ाया गया, तो उसने परमेश्वर से यह कहकर प्रार्थना की, कि, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका २३:३४)। कितनी बड़ी आशीष ! कितनी महान् बात ! कि परमेश्वर का एकलौता पुत्र हमारे लिये मर गया। और क्योंकि यीशु हमारे पापों के बदले में मर गया, इसलिये इस महान् आशीष ने हमारे लिये एक और विशाल आशीष का द्वार खोल दिया, अर्थात हम यीशु में अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके उसके द्वारा स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं, और वहां हमेशा के लिये परमेश्वर की संगति में रहकर उन सब आशीषों का आनन्द उठा सकते हैं जो हमें स्वर्ग में मिलेंगी। क्या आपने यीशु में विश्वास कर लिया है ? क्या आप मानते हैं कि वह आपके पापों के बदले में क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया ? क्या आपने उसकी आज्ञा को मानकर पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है ? (लूका १३:३ ; मरकुस १६:१६)। कितनी बड़ी आशीष की बात है यह, मित्रो, कि आज हमें अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये कोई बलिदान नहीं देना है, हमें कोई कष्ट नहीं उठाना है, परन्तु केवल प्रभु की साधारण सी आज्ञा का पालन करके ही हम अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं !

सो, सोचिये अपनी आशीषों को ! गिनिए अपनी बरकतों को ! और आप सचमुच में आश्चर्य में डूब जाएंगे। सो मुस्कुराईये, और धन्यवाद दीजिये प्रभु को उन सब आशीषों के लिये जो इस समय आपके पास हैं और जो उसके अनुग्रह से आपको मिल सकती हैं।

सदाकाल का उद्धार

मित्रो:

पवित्र बाइबल में एक जगह हम मसीह यीशु के बारे में इस प्रकार पढ़ते हैं: "और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५:८,९)। यहां मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं कि जो उद्धार हमें मसीह में मिलता है वह अनन्तकाल का है, अर्थात् वह हमेशा के लिये और अनन्त उद्धार है। उद्धार का अर्थ है मुक्ति या छुटकारा। अकसर कुछ लोग अपने घरों में चूहों से बड़े परेशान रहते हैं, और उन्हें पकड़ने के लिये हम एक चूहेदान का इस्तेमाल करते हैं। हम चूहेदान के कांटे में एक रोटी का टुकड़ा फंसा देते हैं, और जब चूहा उसे देखता है तो वह उसे खाने के लिये उसके भीतर आ जाता है, और इस प्रकार वह उस चूहेदान के भीतर फंस जाता है। बाइबल कहती है, कि इसी प्रकार "प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवति होकर पाप को जनती है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १:१४,१५)। मित्रो, शैतान नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य उद्धार पाए, और इसलिये वह तरह-तरह कि वस्तुएं दिखाकर मनुष्य को लुभाता है, और मनुष्य अपनी अभिलाषा से खिचकर उसके फंदे में फंस जाता है।

बाइबल कहती है, मित्रो, कि सबने पाप किया है, और सब परमेश्वर की संगति से रहित हैं। (रोमियों ३:२३)। अर्थात शैतान ने पृथ्वी पर

सभी मनुष्यों को अपने पिंजरे में फंसा रखा है । जब परमेश्वर ने आदि में मनुष्य की सृष्टि की थी, अर्थात् जब उसने अपनी सामर्थ से हमारे सबसे पहिले पिता और माता को बनाया था, शैतान ने उन्हें अपने पिंजरे में फंसाने के लिये एक भी क्षण बरबाद नहीं किया। उसने उन्हें शरीर तथा आंखों की अभिलाषा से आकृषित किया ; उसने उन के भीतर परमेश्वर के समान बनने की अभिलाषा को जाग्रत किया। और वह वास्तव में सफ़ल हो गया । परन्तु मनुष्य उसका दास बन गया, वह उसके फंदे में फंस गया वह, पापी बन गया, क्योंकि उसने शैतान के कहने में आकर अपने बनानेवाले परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा, परन्तु जिस समय यह शोकपूर्ण घटना हुई थी, परमेश्वर ने शैतान से कहा था कि, "मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, तेरे वंश और इसके, वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" (उत्पत्ती ३:१५) । और परमेश्वर की यह भविष्यद्वाणी उस समय पूरी हुई जब मसीह यीशु क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया । वह पाप के कारण क्रूस के ऊपर मर गया, अर्थात् इस प्रकार शैतान ने उसकी एड़ी को डसा परन्तु जब यीशु तीसरे दिन मुर्दों में से फिर जी उठा तो इस तरह उसने शैतान के सिर को कुचल डाला, अर्थात् उसने मौत के ऊपर विजय प्राप्त करके शैतान की शक्ति को नाश कर डाला । मित्रो, सम्पूर्ण बाइबल का एक मुख्य विषय यही है, कि मनुष्य ने शैतान के कहने में आकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर पाप किया, और फलस्वरूप वह मर गया, अर्थात् वह परमेश्वर से दूर और अलग हो गया । परन्तु परमेश्वर ने अपने वचन को पृथ्वी पर मनुष्यों की समानता में भेजकर उसे जगत के पापों का प्रायश्चित बनाया। वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मरा, और परमेश्वर ने उसे अपनी सामर्थ से फिर जिलाकर खड़ा कर दिया। ताकि हम जानें कि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है परन्तु

परमेश्वर का बरदान प्रभु यीशु मसीह में हमारे लिये अनन्त जीवन है।

एक जगह बाइबल का लेखक इस प्रकार कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है ? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के साँचे में ढ़ाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए। मैं तुम्हारी शरीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिये अशुद्धता के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो। जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे। सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उन से उस समय तुम क्या फल लाते थे ? क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है। क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।' (रोमियों ६:१६—२३)।

जी हां, प्रत्येक मनुष्य पापी है, और पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान अनन्त जीवन है, और वह अनन्त जीवन परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु में है। हर एक इन्सान पाप का दास है परन्तु क्रूस पर मसीह की मृत्यु के कारण हमें उसमें हमेशा का छुटकारा प्राप्त होता है। पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य अनन्त विनाश का दन्ड पाएगा, परन्तु

यीशु मसीह में, जो हमारे पापों का प्रायश्चित है, हमें सदाकाल का उद्धार मिलता है। यानी पृथ्वी पर अपने वर्तमान जीवन के समाप्त हो जाने पर आप कहां होंगे या कहाँ पाए जाएंगे, उसका अनुमान आप आज स्वयं इस बात से लगा सकते हैं कि आज आप कहां हैं। यदि आज आप मसीह में नहीं हैं, तो आप पाप के दास हैं, आप शैतान के फंदे में हैं और उसका अन्त अनन्त विनाश है। परन्तु यदि आप आज मसीह में हैं, तो आप पाप से आज़ाद हैं, और जो छुटकारा हमें मसीह में मिलता है वह सदाकाल का उद्धार है। सो आज आप कहां हैं ? और जहां आप आज है उसी के आधार पर आप उस अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे जहां से कभी कोई वापस नहीं आता। वास्तव में यह विचार कितना अधिक गम्भीर है। और यदि यह बात इतनी अधिक गम्भीर न होती तो यीशु इस सम्बन्ध में अपने चेलों को सारे जगत में जाकर प्रचार करने को न कहता। यदि यह बात इतनी अधिक महत्वपूर्ण न होती तो आज मैं आपके सामने उपस्थित होकर इन बातों की चर्चा कदापि न करता। क्या आप सोच रहे हैं ? क्या आप सुन रहे हैं ? आज आप कहाँ हैं ?

आप की आत्मा अनन्त है। क्या आप इस बात को जानते हैं ? आग और तूफ़ान आपके शरीर को नाश कर सकते हैं, परन्तु संसार में ऐसी कोई ताकत नहीं है जो आपकी आत्मा के अस्तित्व को मिटा दे। आपका शरीर मर सकता है, मिट्टी में मिल सकता है, परन्तु आपकी आत्मा का अस्तित्व कभी नहीं मिट सकता। क्योंकि आप परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता पर बनाए गए हैं, और जिस प्रकार परमेश्वर अनन्त है उसी प्रकार आपका आत्मिक अस्तित्व भी अनन्त है। परन्तु उस अनन्तकाल में जहाँ आप प्रवेश करने जा रहे हैं आप कहाँ पाए जाएंगे ? इसलिए आपको अनन्त छुटकारे की आवश्यकता

है, आपको सदाकाल के उद्धार की आवश्यकता है, और वह उद्धार आपसे दूर नहीं है, परन्तु वह आपके निकट है । परमेश्वर ने उसे प्रगट किया है, और उसके पुत्र यीशु ने उसे आप के लिये प्राप्त किया है, और वह उसे आप को देने को तैयार है । क्या आप उसमें विश्वास करेंगे ? क्या आप उसकी आज्ञा को मानेंगे ? आप को याद होगा, कि अभी हम ने अपने पाठ के आरम्भ में पवित्र बाइबल में से प्रभु यीशु के सम्बन्ध में इस प्रकार पढ़ा था, कि "पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी । और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार कारण हो गया" क्या आप उसकी आज्ञा को मानेंगे ? अपनी मृत्यु तथा पुनरुत्थान के बाद उसने आज्ञा देकर कहा था, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा । (मरकुस १६:१६) । क्या आप अपने सारे मन से उसमें विश्वास लाने को तैयार हैं ? यदि आप यीशु में विश्वास करते हैं, तो आपको चाहिए कि आप अपने इस वतमान जीवन को सदा के लिये बपतिस्मे के पानी के भीतर गाड़ दें ।

प्रभु आप को आशीष दे, और अपनी इच्छा पर चलने के लिये आप को समझ और शक्ति दे ।

आप किस की इच्छा पर चल रहे हैं ?

मित्रो :

आज मैं आपके सामने यह सवाल रखना चाहता हूं, कि आप किस की इच्छा पर चल रहे हैं ? वास्तव में हम में से हर एक मनुष्य किसी न किसी की इच्छानुसार चल रहा है। कुछ लोग अपने माता-पिता की इच्छानुसार चल रहे हैं, तो कुछ अन्य दूसरे लोगों की मान-कर चल रहे हैं। इसी प्रकार कुछ लोग ऐसे हैं जो स्वयं अपनी ही इच्छा पर चल रहे हैं। मेरा कहना यह नहीं है, कि मनुष्य को अपने माता-पिता का कहना नहीं मानना चाहिए, या अपने मित्रों और शुभ-चिन्तकों की नहीं सुननी चाहिए । और न ही मैं यह कह रहा हूं कि जो हमें ठीक और उचित दिखाई देता है हमें उसे नहीं करना चाहिए। परन्तु जिस प्रश्न को मैं आपके सामने रख रहा हूं उसका सम्बन्ध उस मार्ग से है जो मनुष्य की आत्मा का मार्ग है। प्रभु यीशु ने एक बार एक जगह इस सम्बन्ध में इस प्रकार कहा था, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चोड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है, और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है, वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७ : १३, १४)।

चाकल मार्ग का अर्थ है, चौड़ा मार्ग, एक ऐसा मार्ग जिस पर मनुष्य अन्य मनुष्यों की इच्छा मानकर चलता है। यह वह मार्ग है जिसका वर्णन बाइबल का लेखक एक जगह इन शब्दों में करता है : "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में

मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४ : १२)। और यह बात सच है कि आज बहुतेरे लोग ऐसे हैं जो इस मार्ग पर चल रहे हैं। अनेक लोग सच्चाई को देखते और पहचानते हुए भी उसको नहीं मानना चाहते, क्योंकि वे कहते हैं कि ऐसा करना उनके माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध है। वास्तव में न्याय के दिन बहुतेरे लोग केवल इसीलिये नाश होंगे क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा से भी अधिक अपने माता-पिता की इच्छा को महत्व दिया था। सो प्रभु यीशु ने एक स्थान पर कहा कि, "जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटे या बेटी को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।" (मत्ती१० : ३७, ३८)। इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य अपने माता-पिता का आदर नहीं करे या उनका कहना नहीं माने। परन्तु जिस बात पर प्रभु ने यहां सबसे अधिक बल दिया है वह यह है कि यदि हम उसके योग्य बनना चाहते हैं तो आवश्यक है कि हम अपने माता-पिता या बेटे और बेटी की इच्छा से बढ़कर उसकी इच्छा का आदर और सम्मान करें। मेरा परिचय अकसर कुछ ऐसे लोगों से होता है जो प्रभु यीशु के सुसमाचार से प्रभावित होकर उसके पीछे आना चाहते हैं। परन्तु वे ऐसा नहीं करते। क्योंकि उन्हें इस बात का डर होता है कि उनके माता-पिता उनसे नाराज़ हो जाएंगे। क्योंकि उनके माता-पिता मसीह को नहीं मानते इसलिये वे भी नहीं मानना चाहते। वे परमेश्वर के क्रोध का सामना करने को तैयार हैं, क्योंकि बाइबल में लिखा है कि जो लोग परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते उन से वह पलटा लेगा (२ थिस्सलुनीकियों १ : ८), परन्तु वे अपने माता-पिता के क्रोध का सामना नहीं कर सकते। और यहां एक बार फिर से हमें प्रभु यीशु के वे शब्द याद आते हैं जहां उसने कहा, "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी

से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।" और, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।" और "जो अपने प्राण बचाता है वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा।" (मत्ती १० : २८, ३२, ३३, ३९)। मैं अकसर इस कार्यक्रम को सुननेवाले अपने सभी श्रोताओं से एक निवेदन और आग्रह करता हूं, अर्थात् यह कि आप परमेश्वर की इच्छानुसार उसके पुत्र यीशु में विश्वास करें और अपने पापों से मन फेरकर उनकी क्षमा के लिये पानी के भीतर बपतिस्मा लें, अर्थात उसके भीतर गाड़े जाएं और उसमें से बाहर आएं। यह योजना मेरी नहीं है, परन्तु यह परमेश्वर की आज्ञा है। यदि आपके पास बाइबल है तो आप इस सम्बन्ध में अपनी बाइबल में इन जगहों पर देख सकते हैं : मरकुस १६ : १६; प्रेरितों के काम २ : ३८ तथा ८ : ३५—३९; रोमियों ६ : ३, ४। अब, यह सुनकर मेरे कुछ श्रोता मित्र मुझे लिखते हैं, कि हमारा बपतिस्मा तो बचपन में हो चुका है, अर्थात् हमारे माता-पिता ने हमें छुटपन में बपतिस्मा दिलवा दिया था। अब ये हमारे सभी मित्र उस समय की बात कर रहे हैं जब वे कुछ ही महीने के एक छोटे से बालक थे, और उनके माता-पिता ने बपतिस्मे के नाम से उनके ऊपर पानी का छिड़काव करवाया था। परन्तु क्या यह बाइबल की शिक्षा है ? क्या यह परमेश्वर की इच्छा है ? प्रभु यीशु ने एक जगह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जो पहिले विश्वास करेगा और फिर बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६ : १६)। और फिर बाइबल हमें स्पष्टता से यह भी बताती है कि बपतिस्मा लेने का अर्थ छिड़काव करना नहीं है परन्तु बपतिस्मे का अर्थ है पानी के भीतर गाड़े जाना और उसमें से बाहर आना। क्योंकि बपतिस्मा प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और कब्र में से

जी उठने का प्रतीक है। अब हमारे बहुत से मित्र इस सच्चाई से परीचित हैं; वे मानते हैं कि वे गलत हैं। परन्तु वे सच्चाई को मानना नहीं चाहते, क्योंकि ऐसा करके वे अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध कदम उठाएंगे। किन्तु प्रभु यीशु के कहने का ठीक यही तात्पर्य था जब उसने कहा था कि "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।" मित्रो, आपकी आत्मा बड़ी ही मूल्यवान् है। जगत और जगत की सारी वस्तुएं नाश हो जाएंगी परन्तु आपकी आत्मा अनन्तकाल तक विद्यमान रहेगी। किस की इच्छा को आप अपने जीवन में महत्व दे रहे हैं ?

क्या आप अन्य लोगों की इच्छा पर चल रहे हैं ? आपके मित्र अच्छे हो सकते हैं, आपके धार्मिक अगुए जिनकी बातों पर आप आंख मींच कर चलते हैं अच्छे हो सकते हैं। परन्तु याद रखें, कि जगत का कोई भी मनुष्य आपकी आत्मा को नहीं बचा सकता। मनुष्य, चाहे कोई भी क्यों न हो, परमेश्वर की दृष्टि में पापी है। इसलिये जगत में प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर के उद्धार की आवश्यकता है और उसने हर एक मनुष्य के लिये उद्धार पाने की अपनी एक ही इच्छा को सब मनुष्यों पर प्रगट किया है। उसकी दो या दो सौ इच्छाए नहीं हैं। परन्तु केवल एक ही इच्छा है। वह सारे जगत का एक समान उद्धार करना चाहता है। परन्तु जगत में परमेश्वर के नाम पर अनेक धर्म हैं, अनेक विचार हैं, और अनेक मार्ग हैं। ये सब परमेश्वर की ओर से नहीं हैं। एक परमेश्वर के अनेक धर्म नहीं हो सकते। एक परमेश्वर के अनेक विचार नहीं हो सकते। एक परमेश्वर के अनेक मार्ग नहीं हो सकते। या क्या परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर है ? (१ कुरिन्थियों १४ : ३३)। एक बार एक जगह प्रभु यीशु ने लोगों के सामने यह प्रश्न रखा था, कि क्या अन्धा-अन्धे को मार्ग बता सकता ? है क्या दोनों गड़हे में नहीं गिरेंगे ? (लूका ६:३९)। मित्रो, मनुष्य

मनुष्यों के पीछे चलकर उद्धार नहीं पा सकता, उसे परमेश्वर की आवश्यकता है। परमेश्वर के धर्म के नाम पर आज संसार में सैंकड़ों रीति-रिवाज हैं, हज़ारों आडम्बर हैं जिन में लगकर मनुष्य अपने धन और समय की तो बरबादी कर ही रहा है परन्तु इसके साथ ही वह अपनी आत्मा की भी हानि उठा रहा है। इस प्रकार के लोग वास्तव में न्याय के दिन लोगों की उस बड़ी भीड़ के साथ होंगे जिनका वर्णन करके एक जगह प्रभु यीशु ने कहा था, कि उस दिन वे मुझ से कहेंगे कि हमने धर्म के नाम में बड़े-बड़े काम किए। परन्तु, प्रभु ने कहा, कि तब मैं उन से कहूंगा कि मैं तुम को नहीं जानता क्योंकि तुमने मेरी उन बातों को नहीं माना जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी थी। (मत्ती ७ : २१—२७)। मित्रो, परमेश्वर ने बाइबल में मनुष्य को अपनी इच्छा दी है। इस पुस्तक में परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी वह इच्छा दी है जिसको मानकर मनुष्य उद्धार प्राप्त कर सकता है। इस पुस्तक में परमेश्वर ने मनुष्य को वह मार्ग दिया है, जिस पर चलकर मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है। क्या आप परमेश्वर की इच्छा पर चल रहे हैं ?

प्रभु यीशु ने कहा है, कि जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले। (मरकुस ८ : ३४)। इसलिये यदि हमें परमेश्वर की इच्छा पर चलना हैं तो आवश्यक है, कि हम अपने आप से इन्कार करें, अर्थात हम उसके पीछे अपनी मन-मानी करके नहीं चल सकते। कुछ बातें ऐसी हो सकती हैं जो शायद हमें ठीक लगें, उन्हें मानने में शायद हमें कोई बुराई नज़र न आए। परन्तु याद रखें, जिस बात की आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी हैं, जिसे मानने का अधिकार हमें परमेश्वर ने नहीं दिया है, वह उसकी इच्छा के विरुद्ध है। मेरी आशा है कि इन बातों के

ऊपर आप पूरी सन्जीदगी के साथ ग़ौर करेंगे, और इस बात का निश्चय करेंगे कि अब आप प्रत्येक बात में केवल परमेश्वर की ही इच्छा को महत्व देंगे। (कुलुस्सियों ३ : १७)।

उसी की आशीष आप सब पर होती रहे।

आपके जीवन में पहिला कौन है ?

मित्रो:

बाइबल में लूका की पुस्तक के नवें अध्याय में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि जब यीशु अपने चेलों के साथ मार्ग में जा रहा था, " तो किसी ने उस से कहा, जहाँ-जहाँ तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूँगा। यीशु ने उससे कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं। उसने दूसरे से कहा मेरे पीछे हो ले ; उसने कहा हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। उसने उससे कहा, मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना। एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूँगा ; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं। यीशु ने उससे कहा ; जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं ।" (लूका ९:५७-६२)।

यहां जिस विशेष बात को हम देखते हैं, वह यह है कि यदि हम प्रभु के पीछे आना चाहते हैं तो हमें अपने जीवन में सबसे पहिला स्थान उसे देना है। सो आज हमारे सामने यह एक बड़ा ही महत्व-पूर्ण प्रश्न है, अर्थात्, हमारे जीवन में पहिला कौन है ? अनेक बार हम परमेश्वर के वचन की बातें सुनकर अपने जीवनों को उसे देने की सोचते हैं ; अनेक बार हम अपने जीवनों को आत्मिक बातों की ओर लगाना चाहते हैं, परन्तु फिर हमारे सामने वह वस्तु या वस्तुएं

आ जाती हैं जिन्हें हम अपने जीवन में महत्वपूर्ण समझते हैं, और तब हम अपना निश्चय बदल देते हैं। परन्तु महत्वपूर्ण क्या है ? शरीर की अभिलाषाएं या आत्मा का उद्धार ? हमारी इच्छा या परमेश्वर की इच्छा ? पृथ्वी की वस्तुओं के साथ साठ या सत्तर बरस का आनन्द या परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन ? मित्रो, यदि मनुष्य आनन्द और जीवन के महत्व को पहिचानता है, तो उसे वास्तव में उस आनन्द और उस जीवन की खोज करनी चाहिए जो मनुष्य को पृथ्वी पर नहीं मिल सकता। क्या आप के पास प्रभु यीशु के इस सवाल का जबाब है, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा ?" (मत्ती १६:२६)। वास्तव में मनुष्य की आत्मा जगत की सारी वस्तुओं से मूल्यवान है। मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में कुछ नहीं दे सकता। वह अपनी देह को बचा सकता है, परन्तु केवल कुछ समय के लिये। जगत का सारा धन और सारी बुद्धि और सारी ताकत मिलकर भी एक मनुष्य की देह को मिट्टी में मिलने से नहीं रोक सकते। परन्तु तौभी हमें अपनी देह की चिन्ता रहती है। हम सब कुछ खो सकते हैं परन्तु अपनी देह को नहीं खोना चाहते। लेकिन फिर भी हमें उसे खोना पड़ता है। इसलिये यदि मनुष्य अपने आप को बचाना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह अपनी आत्मा को बचाले। क्योंकि आत्मा वह वस्तु है जो कभी नाश न होगी, अर्थात् आपकी आत्मा अमर है। परन्तु पाप के कारण मनुष्य की आत्मा परमेश्वर से दूर है, और जब तक मनुष्य परमेश्वर की इच्छा मानकर उसके साथ अपना मेल नहीं कर लेता, वह उससे दूर और अलग रहेगा। सच्चा जीवन और सच्चा आनन्द परमेश्वर के पास है। जब हम उद्धार या मुक्ति की बात करते हैं तो इससे हमारा यही अभिप्राय होता है कि हम अपने पापों से छुटकारा पाकर परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें ; उसके

पास वापस आ जाएं। जब हम आत्मा को बचाने की बात करते हैं, तो इस से हमारा अभिप्राय यही होता है, कि हम पाप के कारण अपनी आत्मा को नरक में खोने से बचा लें। परन्तु हम किस वस्तु को बचा रहें हैं ? अपनी देह को या अपनी आत्मा को ? कौन सी वस्तु आपके जीवन मे पहिली है ?

मित्रो, मैं चाहता हूं कि आप प्रभु यीशु के इन शब्दों को ग़ौर से सुनें, प्रभु ने कहा, "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो ; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। शरीर का दिया आंख है : इसलिये यदि तेरी आँख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो तो तेरा सारा शरीर भी अंधियारा होगा ; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा ! कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।" इसलिये मैं तुम से कहता हूं" प्रभु ने कहा, "कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे ? और क्या पीएंगे ? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे ? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं ? आकाश के पक्षियों को देखो ! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते है ; तौभी तुम्हारा स्वर्गिय पिता उनको खिलाता है ; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते ? तुम में कौन है, जो

चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है ?और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो ? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते न कातते हैं । तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलेमान भी अपने सारे विभव में उन में से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था । इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह क्योंकर न पहिनाएगा ? इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे ? क्योंकि अन्य जाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए । इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी ।" (मत्ती ६:१९-३३) ।

क्या खोज रहे हैं सबसे पहिले आज आप अपने जीवन में ? सांसारिक सुख और आनन्द, या अपनी आत्मा का उद्धार ? शायद आप अभी कुछ पल के लिये अपनी आत्मा के विषय में चिन्तित हो जाएं । शायद आप यह जानना चाहें, कि अपनी आत्मा को बचाने के लिए मैं क्या करूं ? परन्तु क्या आप सचमुच में तैयार हैं ? क्या आप अपनी आत्मा को बचाने के लिये कुछ भी करने और कुछ भी छोड़ने को तैयार हैं ? एक बार एक मनुष्य ठीक यही सवाल लेकर प्रभु यीशु के पास आया था । उसने प्रभु से पूछा था, कि "अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं ?" (मरकुस १०: १७) । परन्तु वह मनुष्य बड़ा ही धनी था । उसे अपने धन से बड़ा ही प्रेम था । वह सब कुछ करने को तैयार था, क्योंकि उसने प्रभु से पूछा कि "मैं क्या करूं ?" परन्तु वह केवल एक चीज़ नहीं छोड़ सकता था, अर्थात् अपना धन । सो जब प्रभु यीशु ने उस से कहा, कि, "जो

कुछ तेरा है, उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले" तो लिखा है, कि वह मनुष्य बिना कुछ कहे शोक करता हुआ वापस चला गया। (मरकुस १० : २२)। वह अनन्त जीवन पाना चाहता था; वह अपनी आत्मा का उद्धार पाना चाहता था, परन्तु इस बात का महत्व उसके जीवन में दूसरे नम्बर पर था। पहिला स्थान उसके जीवन में उसके धन का था। परन्तु आपके जीवन में पहिला स्थान किस वस्तु का है ? पृथ्वी या स्वर्ग का ? देह या आत्मा का ? सांसारिक जीवन या अनंत जीवन का ? कौन सी वस्तु आपके निकट सबसे अधिक महत्वपूर्ण है ?

क्या आप प्रभु यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाने को तैयार हैं ? क्या आप जगत की वस्तुओं से मन फिराने को तैयार हैं ? क्या आप पाप और प्रत्येक उस वस्तु को छोड़ने को तैयार हैं जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है ? प्रभु यीशु ने कहा है कि यदि कोई मनुष्य मुझ में विश्वास लाएगा, और अपना मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा लेगा तो वह उद्धार पाएगा। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)। क्या आप प्रभु की आज्ञा मानने को तैयार हैं ?

मेरी प्रार्थना है परमेश्वर से मित्रो, कि वह आपको ऐसी समझ दे कि आप उसे और उसके वचन को अपने जीवन में सबसे पहिला स्थान देना सीखें और सबसे पहिले उसके धर्म और उसके राज्य की खोज करें। प्रभु आप सबको आशीष दे।

"तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे ?"

मित्रो :

अपने बाइबल अध्ययन के इस समय आज हम अपने पाठ में बाइबल में से १ राजा की पुस्तक के १८ वें अध्याय में से पढ़ेंगे। यहां हम एलिय्याह नाम के परमेश्वर के एक भक्त के बारे में पढ़ते हैं। एलिय्याह अहाब राजा के दिनों में परमेश्वर की ओर से भविष्य-द्वाणी किया करता था। अहाब की रानी का नाम ईज़ेबेल था, और वह बाल नाम के एक देवता की पूजा किया करती थी। उन दिनों में न केवल अहाब परन्तु देश के लगभग सभी लोग ईज़ेबेल के कारण बाल को पूजने लगे थे, और यहां तक कि जो लोग उसके राज्य में बाल को नहीं मानते थे उन्हें वह मरवा डालती थी। ऐसे समय में एलिय्याह को इज़ेबेल के भय के कारण अपने प्राणों को लेकर भागना पड़ा। परन्तु कुछ समय पश्चात परमेश्वर का वचन पाकर एलिय्याह अहाब के पास पहुंचा, और उसने उसके सामने यह प्रस्ताव रखा कि तू बाल के सारे नबियों को, जिनकी गिनती लगभग चार सौ की थी, बुलवा ले। और एलिय्याह ने अहाब से कहा, कि आज हम तेरे सामने इस बात का फ़ैसला करेंगे कि सचमुच में परमेश्वर कौन है, और यदि बाल सच्चा परमेश्वर है तो हम सब उसी के पीछे हो लेंगे, परन्तु यदि यहोवा ही सच्चा वा जीवता परमेश्वर है तो फिर हम सब उसी को मानेंगे। एलिय्याह का यह प्रस्ताव अहाब को अच्छा लगा, सो उसने सारे इस्राएलियों को और बाल के सारे नाबियों को कर्म्मेल नाम के एक पर्वत पर इकट्ठा होने की आज्ञा दी। जब सब लोग उस जगह पहुंच गए, तो हम इस प्रकार पढ़ते है, कि, "एलिय्याह सब

लोगों के पास आकर कहने लगा, "तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो तो उसके पीछे हो लो, और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो। लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कहीं। तब लोगों ने एलिय्याह से कहा, यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूं; और बाल के नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं। इसलिये दो बछड़े लाकर हमें दिए जाएं, और वे एक अपने लिये चुनकर उसे टुकड़े-टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दें और कुछ आग न लगाएं; और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रखूंगा, और कुछ आग न लगाऊंगा। तब तुम तो अपने देवता से प्रार्थना करना, और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा; और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे। तब सब लोग बोल उठे, अच्छी बात। और एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो, क्योंकि तुम तो बहुत हो; तब अपने देवता से प्रार्थना करना, परन्तु आग न लगाना। तब उन्होंने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया था लेकर तैयार किया, और भोर से लेकर दोपहर तक वे यह कहकर बाल से प्रार्थना करते रहे, कि हे बाल हमारी सुन, हे बाल हमारी सुन! परन्तु न कोई शब्द हुआ और न कोई उत्तर देनेवाला हुआ। तब वे अपनी बनाई हुई बेदी पर उछलने कूदने लगे। दोपहर को एलिय्याह ने यह कहकर उनका ठट्ठा किया, कि ऊंचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह तो ध्यान लगाए होगा, वा कहीं गया होगा, वा यात्रा में होगा, या हो सकता है कि सोता हो और उसे जगाना चाहिए। और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार-पुकार के अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बरछियों से अपने-अपने को यहां तक घायल किया कि लोहू लुहान हो गए। वे दोपहर भर ही क्या, वरन भेंट चढ़ाने के समय तक नबूवत करते रहे, परन्तु कोई शब्द सुन न पड़ा; और न तो किसी ने उत्तर दिया और न कान लगाया। तब एलिय्याह ने सब लोगों से कहा, मेरे निकट

आओ; और सब लोग उसके निकट आए। तब उसने यहोवा की वेदी की जो गिराई गई थी मरम्मत की। फिर एलियाह ने याकूब के पुत्रों की गिनती के अनुसार जिसके पास यहोवा का वचन आया था, कि तेरा नाम इस्राएल होगा, बारह पत्थर छांटे, और उन पत्थरों से यहोवा के नाम की एक वेदी बनाई, और उसके चारों ओर इतना बड़ा एक गड़हा खोद दिया, कि उस में दो सआ बीज समा सके। तब उसने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े-टुकड़े काट कर लकड़ी पर रख दिया, और कहा, चार घड़े पानी भर कर होम-बलि, पशु और लकड़ी पर उंडेल दो। तब उसने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो; तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उसने कहा तीसरी बार करो; तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया। और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उसने जल से भर दिया। फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जाकर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा। आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूं, और मैंने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है। तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया। यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है।" (१ राजा १८ : २१—३९)।

मित्रो, यहाँ से हम देखते हैं, कि स्वर्ग तथा पृथ्वी और सारी सृष्टि का केवल एक ही परमेश्वर है। वही सच्चा और जीवता परमेश्वर, जो आपका और मेरा परमेश्वर है, आदर, भक्ति और महिमा के योग्य है। वह परमेश्वर पत्थर और लकड़ी नहीं है, वह परमेश्वर सृष्टि की

कोई वस्तु नहीं है, परन्तु वह सृष्टि का बनानेवाला और सारे जगत का स्वामी है। मित्रो, आज मैं एलिय्याह के समान आपके सामने यह अहम सवाल रख रहा हूं, कि आप कब तक दो विचारों में लटके रहोगे ? सारे जगत का केवल एक ही परमेश्वर है। परन्तु तौभी पृथ्वी पर आज हम देखते हैं कि लोगों के लाखों ईश्वर हैं। अनेक लोग सभी को स्वीकार करते हैं, और सोचते हैं कि सभी मिलकर एक परमेश्वर है। परमेश्वर भक्ति के नाम पर लोग आज अनेक वस्तुओं की उपासना कर रहे हैं। कुछ अज्ञानता के कारण कर रहे हैं और कुछ अपने मनों की ढिठाई के कारण। एलिय्याह के दिनों के समान आज भी पृथ्वी पर ऐसे बहुत ही कम लोग हैं जो वास्तव में सच्चे और जीवते परमेश्वर की उपासना कर रहे हैं। इसलिए, मित्रो, आज मैं आपके सामने एलिय्याह के समान यह चुनौती रखता हूं, कि आइए आज हम परखकर देख लें कि वास्तव में परमेश्वर कौन है। मैं नहीं जानता कि आप कौन सी वस्तु या किस व्यक्ति को परमेश्वर के रूप में मानते हैं। मुझे इस बात का भी ज्ञान नहीं है कि आपके मन में परमेश्वर की क्या धारणा है। परन्तु मैं आज भी उसी सच्चे तथा जीवते परमेश्वर के ऊपर विश्वास रखता हूं जिसने एलिय्याह की प्रार्थना का उत्तर आकाश से आग गिरा कर दिया था। वह परमेश्वर आत्मा है; वह सामर्थी है। वह जीवित है और देखता है और सुनता है। वह कोई निर्जीव वस्तु नहीं है, वह कोई सुन्दर आकृति नहीं है।

वह परमेश्वर अहाब के दिनों में एलिय्याह जैसे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा मनुष्यों पर अपनी इच्छा को प्रगट किया करता था। परन्तु आज उसने हमें अपनी एक पुस्तक दी है। इस पुस्तक बाइबल में उसने आज हमारे लिए अपनी इच्छा को प्रकट किया है। इस पुस्तक में वह हमें अपने उस एकलौते पुत्र के बारे में बताता है जिसे उसने जगत के सारे लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। आज अनेक लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने

के लिये अपने आपको दुख दे रहे हैं; अपने देवी और देवताओं को बलिदान और भेंट चढ़ा रहे हैं। परन्तु जो हम सबका सच्चा परमेश्वर है, उसने हम सबसे ऐसा प्रेम रखा कि उसने हमारा उद्धार करने के लिए अपने ही पुत्र को हम सबके लिये बलिदान कर दिया। वह हमारे दुख से दुखी होता है, उसे हमारी भलाई की चिन्ता है, वह एक प्रेमी पिता है जो हमसे बलिदान नहीं चाहता परन्तु हमें बचाने के लिए स्वयं बलिदान देता है। वह चाहता है कि हम सबका उद्धार हो और हम सब अपने पापों से छुटकारा पाकर उसके स्वर्ग में प्रवेश करें। उसने जगत पर अपने अनुग्रह को अपने पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा प्रगट किया है, और उसने अपनी सामर्थ को उसे फिर से मुर्दों में से जिलाकर प्रकट किया है। क्या आप उस सच्चे और महान् परमेश्वर में विश्वास रखते हैं ? वह आपको बलिदान करने को नहीं कहता; वह आपको कष्ट उठाने को नहीं कहता। परन्तु केवल इतना चाहता है कि आप उसके पुत्र मसीह यीशु पर विश्वास लाएं, और अपने सब पापों से मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें। विश्वास लाने का अर्थ यह है, कि अब आप केवल उसी को मानेंगे, और मन फिराने का अर्थ है, कि अब आप पाप का जीवन नहीं बिताएंगे, और बपतिस्मा लेने का अर्थ है कि अब आप एक नए जीवन की चाल चलेंगे, क्योंकि बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य अपने वर्तमान जीवन को पानी की कब्र के भीतर गाड़ देता है। (यूहन्ना ८:२४; लूका १३:३; रोमियों ६:३-६)।

मित्रो, ज़िन्दा और सच्चा परमेश्वर जो जगत से प्रेम रखता है, आपको पाप के कारण नाश होने से बचाना चाहता है। केवल उसी पर विश्वास रखें, केवल उसी की ओर फिरें और केवल उसी की मानें, क्योंकि केवल वही सामर्थी है।

उसी की आशीष हम सब पर बनी रहे।

यीशु के पीछे हो लेने का अर्थ क्या है ?

मित्रो :

मेरी आशा है कि आज एक बार फिर से हम पूरी गम्भीरता के साथ अपने पाठ को देखने के लिये तैयार हैं। आपको याद होगा कि अपने पिछले पाठ में हमने एलिय्याह नाम के एक भविष्यद्वक्ता के बारे में देखा था । हमने देखा था, कि एलिय्याह उस समय भी सच्चे परमेश्वर के लिये अकेला ही खड़ा रहा जबकि लगभग सब के सब लोग परमेश्वर को छोड़कर बाल देवता को मानने लगे थे। और न केवल वह परमेश्वर के प्रति स्वयं वफ़ादार बनकर चलता रहा, परन्तु उसने उन सब लोगों के सामने जो परमेश्वर से फिर गए थे यह चुनौती भी रखी कि तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे ? उसने कहा, कि आओ हम परखकर देखें कि वास्तव में परमेश्वर बाल है या यहोवा। वास्तव में यह काम एलियाह के लिये बड़ा ही कठिन था, जबकि हम देखते हैं कि राजा और प्रजा दोनों ही परमेश्वर से फिर गए थे। जबकि उन सब ने उस बड़े और चाकल मार्ग को चुन लिया था जो विनाश को पहुंचता है, एलिय्याह उस समय अकेला ही उस सकरे मार्ग पर बना रहा जो परमेश्वर का मार्ग है। (मत्ती ७:१३,१४) । मित्रो, आज बहुतेरे लोग एक ऐसे परमेश्वर के पीछे चल रहे हैं जो उनकी कल्पना का परमेश्वर है। आज अनेक लोग उस परमेश्वर को मान रहे हैं जो उनकी अज्ञानता का परमेश्वर है। परन्तु परमेश्वर कल्पना और अज्ञानता का परमेश्वर नहीं है, वह वास्तव में सच्चा और जीवता परमेश्वर है। जिससे हम प्रार्थना के द्वारा बातें कर सकते हैं, और जो आज हमसे अपने वचन बाइबल के द्वारा बातें करता है उसने हमें अपनी एक इच्छा दी है, उसने हमें अपना एक मार्ग दिया है। उसने हमें हमारी कल्पनाओं और अज्ञानताओं पर नहीं छोड़ दिया है, कि हम जैसे चाहें उसे मानें और जिस प्रकार हमारा मन करे उसके पीछे चलें। परन्तु उसने अपने आप को

प्रगट किया है, उसने अपनी इच्छा को प्रगट किया है उसने सारे जगत के उद्धार के लिये अपने केवल एक ही मार्ग को प्रगट किया है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। परमेश्वर की इस योजना में जगत के सारे लोग शामिल हैं, अर्थात् परमेश्वर के पास पहुंचने का और कोई मार्ग नहीं है। परमेश्वर का पुत्र यीशु जगत के लिये परमेश्वर का मार्ग है। (यूहन्ना १४:६)। वह परमेश्वर की इच्छा से जगत में आया और उसी की इच्छा से सारे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर लटकाया गया। वह परमेश्वर की सामर्थ से मुर्दों में से जिलाया गया, और सारे जगत के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण बना। (इब्रानियों ५:८,९)।

परमेश्वर की इच्छा है, मित्रो, कि सारा जगत उद्धार पाए, और उसकी आज्ञा है कि प्रत्येक मनुष्य अपने पाप से मन फिराए और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर यीशु के पीछे हो लें। (प्रेरितों १७ : ३०, ३१; प्रेरितों २ : ३८) :

परन्तु, यीशु के पीछे हो लेने का अर्थ क्या है ? जिस एलिय्याह के सम्बन्ध में हम ने अभी थोड़ी देर पहिले देखा, जब परमेश्वर के पास बुला लिये जाने का उसका समय पूरा हुआ, तो उसे परमेश्वर की यह आज्ञा मिली कि वह अपने काम को एलीशा नाम के एक दूसरे व्यक्ति को सौंप दे। बाइबल में पहिले राजा की पुस्तक के १९ वें अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "तब वह वहाँ से चल दिया, और शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे किए हुए आप बारहवीं के साथ होकर हल जोत रहा था। उसके पास जाकर एलिय्याह ने अपनी चद्दर उस पर डाल

दी। तब वह बैलों को छोड़कर एलिय्याह के पीछे दौड़ा, और कहने लगा, मुझे अपने माता पिता को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूंगा। उसने कहा, लौट जा, मैंने तुझसे क्या किया है ? तब वह उसके पीछे से लौट गया, और एक जोड़ी बैल लेकर बलि किए, और बैलों का सामान जलाकर उनका मांस पकाके अपने लोगों को दे दिया, और उन्होंने खाया; तब वह कमर बान्धकर एलिय्याह के पीछे चला, और उसकी सेवा टहल करने लगा।" (१ राजा १९ : १९-२१)।

मित्रो, यीशु के पीछे हो लेने का ठीक यही अर्थ है, जैसे कि अभी हमने एलीशा के सम्बन्ध में देखा। जब एलीशा ने एलिय्याह के पीछे हो लेने का निश्चय किया, तो हम देखते हैं, कि उसने अपने बैलों का सामान जलाकर आग सुलगाई, और उसने अपने बैलों को काटकर उस आग पर पकाया, और फिर उसने उनका मांस अपने सब लोगों को खिला दिया, और तब वह कमर बांधकर एलिय्याह के पीछे हो लिया। मित्रो, आज बहुतेरे लोग यीशु के पीछे चलने का दावा करते हैं, परन्त वे उसके पीछे अपने बैलों को साथ लेकर चल रहे रहे हैं। आज अनेक लोग उसके पीछे आना चाहते हैं, परन्तु वे उसके पीछे अपने बैलों को साथ लेकर आना चाहते हैं। लेकिन आवश्यक है कि यीशु के पीछे हो लेने से पहिले हम अपने बैलों को नाश कर दें। क्योंकि यीशु ने कहा, कि, "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकार, मेरे पीछे हो ले।" (मरकुस ८ : ३४)।

एलीशा ने अपने बैलों को काट डाला, क्योंकि वह उनके पास वापस नहीं लौटना चाहता था। प्रत्येक पाप और प्रत्येक वह वस्तु जो हमें परमेश्वर के समान पवित्र बनने से रोकती है एक बैल है। हम यीशु के पाछे हो लेना चाहते हैं, क्योंकि वह परमेश्वर का एक-

लौता पुत्र है; वह परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है। (इब्रानियों १ : ३)। उसने पृथ्वी पर एक सिद्ध और पाप रहित जीवन व्यतीत किया, अर्थात् उसमें एक भी पाप नहीं था इसलिये वह हमारा आदर्श है, (१ पतरस २ : २१), ताकि हम उसके पाछे चलकर उसके समान पवित्र बनें। किन्तु बहुतेरे लोग यीशु के पीछे नहीं आना चाहते क्योंकि वे अपने बैलों को मारने को तैयार नहीं हैं। अक्सर कुछ लोग यीशु के पीछे चलने में उलझन अनुभव करते हैं, और इसका दोष वे अपने माता-पिता या अपने समाज पर लगाते हैं। परन्तु ये क्या हैं ? और कुछ नहीं, मित्रो, ये हमारे बैल हैं। सांसारिक वस्तुओं का आनंद, शराब, जूआ, और सिगरेट जैसी बुरी आदतें, अर्थात् प्रत्येक पाप जो पृथ्वी पर पाया जाता है, उस मनुष्य के लिये एक बैल के समान है जो मसीह के पीछे आना चाहता है। और, मित्रो, कुछ लोग तो इस प्रकार के बैलों से इतने अधिक घिरे हुए हैं कि वे स्वयं तो नज़र ही नहीं आते, केवल बैल ही बैल दिखाई पड़ते हैं।

किन्तु फिर कुछ लोगों के पास आलस का बैल है, अर्थात् वे प्रभु के पीछे चलने में सुस्त हैं। एक बार एक मसीही भाई से जब मैंने पूछा, कि पिछले रविवार को वे कलीसिया में प्रभु की उपासना करने क्यों नहीं आए ? इस मनुष्य ने पहिले एक बार मुझे बैलों के सम्बन्ध में उपदेश देते सुना था। सो मेरे सवाल के जवाब में वे तत्काल बोल उठे, कि भाई मुझे बैलों ने पकड़ लिया था। अर्थात् या तो वे देर तक सोते रहे या फिर किसी और कारण से नहीं आ सके। मित्रो, हमें उन वस्तुओं का बलिदान करना है. उन आदतों को मारना है और ऐसे कारणों को अपने से दूर हटाना है जो हमें मसीह के पीछे चलने से रोकते हैं। कहां है आपका बैल ? कौन सा है आपका बैल ? क्या वह भय है ? क्या वह सुस्ती है ? क्या वह पाप है ? क्या वह आपका कोई मित्र या सम्बन्धि है ? वह बैल कोई भी क्यों न हो आपको

चाहिए कि आप उसे अपने से दूर कर दें। हम अक्सर एक गीत गाते हैं, जो इस प्रकार है, "यीशु के पीछे मैं चलने लगा, न लौटूंगा, न लौटूंगा।" और वास्तव में यीशु के पीछे चलने का ठीक यही अर्थ है।

अब आज के पाठ का अन्त हम बाइबल में लिखे इस महत्वपूर्ण विचार के साथ करते हैं, "इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।" (इब्रानियों १२:१—३)। यीशु आपका उद्धार करना चाहता है। वह आपको मुक्ति देना चाहता है। क्या आप उसके पास आने को तैयार हैं? क्या आप उसके पीछे सब कुछ छोड़कर चलने को तैयार हैं?

परमेश्वर जो कहता है
वही उसका अर्थ होता है

मित्रो :

अब हमारे पास यह समय है कि हम अपने ध्यानों को परमेश्वर के वचन बाइबल की ओर लगाएं, और अपने आज के पाठ पर विचार करें। आज हम अपने पाठ के आरम्भ में सबसे पहिले बाइबल की एक पुस्तक में से पढ़ने जा रहे हैं। इस पुस्तक का नाम है १ राजा की पुस्तक और इस पुस्तक के १३ वें अध्याय में से इस समय हम पढ़ने जा रहे हैं। यहाँ हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "तब यहोबा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था। उस जन ने यहोवा से वचन पाकर बेदी के विरुद्ध यों पुकारा, कि वेदी, हे वेदी ! यहोबा यों कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नाम एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊँचे स्थानों के याजकों को जो तूझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा; और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियाँ जलाई जाएँगी। और उसने उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिन्ह भी बताया, कि यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिन्ह यह है कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी। तब ऐसा हुआ कि परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उसने बेतेल के विरुद्ध पुकारकर कहा, यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, उसको पकड़ लो : तब उसका हाथ जो उसकी ओर बढ़ाया गया था सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। और वेदी फट गई, और उस पर की राख गिर गई, सो वह चिन्ह

पूरा हुआ, जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर, कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए : तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, मेरे संग घर चलकर अपना प्राण ठंडा कर, और मैं तुझे दान भी दूँगा। परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे, तौभी तेरे घर न चलूंगा; और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा और न पानी पीऊंगा क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है, कि न तो रोटी खाना, और न पानी पीना, और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा। इसलिए वह उस मार्ग से जिससे बेतेल को गया था न लौटकर, दूसरे मार्ग से चला गया।"

परन्तु फिर हम इससे आगे यों पढ़ते हैं, कि, "बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था, और उसके एक बेटे ने आकर उससे उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किये थे; और जो बातें उसने राजा से कही थीं, उनको भी उसने अपने पिता से कह सुनाया। उसके बेटों ने तो यह देखा था, कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया था, किस मार्ग से चला गया, सो उनके पिता ने उनसे पूछा, वह किस मार्ग से चला गया ? और उसने अपने बेटों से कहा, मेरे लिए गदहे पर काठी बान्धो, तब उन्होंने गदहे पर काठी बान्धी, और वह उस पर चढ़ा, और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक बांजवृक्ष के तले बैठा हुआ पाया, और उससे पूछा, परमेश्वर का जो जन यहूदा से आया था, क्या तू वही है ? उसने कहा, हाँ, वही हूं। उसने उससे कहा, मेरे संग घर चलकर भोजन कर। उस ने उस से कहा मैं न तो तेरे संग लौट सकता, और न तेरे संग घर में जा सकता हूं, और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊंगा

वा पानी पीऊंगा। क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहां न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना। उस ने कहा, जैसा तू नबी है वैसे ही मैं भी नबी हूं; और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए।" किन्तु, "वह उसने उससे झूठ कहा।" "अतएव वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पीया। और जब वे मेज़ पर बैठे ही थे, कि यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुंचा, जो दूसरे को लौटा ले आया था। और उसने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा से आया था पुकार के कहा, यहोवा यों कहता है, इसलिये कि तूने यहोवा का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी उसे भी नहीं माना; परन्तु जिस स्थान के विषय उसने तुझ से कहा था, कि उसमें न तो रोटी खाना और न पानी पीना उसी में तूने लौटकर रोटी खाई, और पानी भी पीया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी। जब वह खा पी चुका, तब उसने परमेश्वर के उस जन के लिये जिसको वह लौटा ले आया था गदहे पर काठी बन्धाई।" और "जब वह मार्ग में चल रहा था, तो एक सिंह उसे मिला और उसको मार डाला।" (१ राजा १३:१—२४)।

बाइबल में से इस वर्णन को पढ़कर जिस मुख्य पाठ को आज हम सीखते हैं वह बड़ा ही स्पष्ट है, अर्थात, परमेश्वर जो कहता है वही उसका अर्थ होता है। वह कोई मनुष्य नहीं है जो अपनी बात से फिर जाए। उसे मनुष्य की तरह अपनी राय को बदलने की आवश्यकता नहीं है। उसे भूत, भविष्य, और वर्तमान का पूरा ज्ञान है। इसलिये जो वह आज कहता है उसे कल बदलने की आवश्यकता उसे नहीं होगी। परमेश्वर के उस जन ने, जो यहूदा से आया था, राजा

यारोबाम और उस बूढ़े नबी को वास्तव में बड़ा ही अच्छा उत्तर दिया था। उसने राजा के निमन्त्रण और दान को अस्वीकार कर दिया, और इसी प्रकार उसने बूढ़े नबी के यहां जाने से इंकार कर दिया, क्योंकि उसने कहा कि मैं परमेश्वर के वचन के विरुद्ध कोई काम नहीं करूंगा। कितना बेहतरीन उदाहरण हमें इस बात में मिलता है। अकसर हमारे सामने लालच आते हैं और परमेश्वर के वचन के विरुद्ध कार्य करने के अवसर आते हैं। हमारे सामने ऐसी परीक्षाएँ आती हैं जो हमें परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध कदम उठाने को उकसाती हैं। परन्तु हम में से कितने हैं जो ऐसी स्थिति में या ऐसे समय पर परमेश्वर के वचन और उसकी इच्छा और आज्ञाओं का याद रखते हैं?

किन्तु यह सब कुछ होते हुए भी, हम देखते हैं, कि उस मनुष्य ने एक बहुत ही बड़ी गलती कर डाली। यद्यपि कि वह जानता था कि परमेश्वर का वचन और उसकी आज्ञा क्या है, परन्तु फिर भी वह उसे बूढ़े नबी की बात मानकर उसके घर गया और उसने वह काम किया जो उसे परमेश्वर ने करने को मना किया था। वह भूल गया कि परमेश्वर का वचन अटल है, (मत्ती २४ : ३५), और जो उसने एक बार कह दिया है उसमें से वह कुछ नहीं बदलता। प्रेरित पौलुस बाइबल के नए नियम में एक जगह इस प्रकार कहता है, "कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग का कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्त्रापित हो।" (गलतियों १ : ७, ८)।

मित्रो, परमेश्वर की केवल एक ही इच्छा है, उसका केवल एक ही सुसमाचार है। यद्यपि आरम्भ में वह अपने भविष्यद्वक्ताओं के

द्वारा अपने वचन को प्रगट करता था, परन्तु आज उसने हमें अपना वचन एक पुस्तक में लिखवाकर दिया है। आज परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये हमें किसी मनुष्य के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। बाइबल में हम स्वयं परमेश्वर की इच्छा को पढ़कर देख सकते हैं। और यदि कोई मनुष्य आज हमें कोई ऐसी बात बताता है जो इस पुस्तक में लिखी हुई नहीं है, तो वह मनुष्य झूठा है। बाइबल में हमें केवल एक ही सुसमाचार मिलता है, अर्थात मसीह हमारे लिये मारा गया, और गाड़ा गया और जी उठा। (१ कुरिन्थियों १५ : १—४)। इसी सुसमाचार को प्रचार करने की आज्ञा यीशु ने दी, और उसने कहा, कि जो मनुष्य इस सुसमाचार को मानकर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। अब यदि कोई मनुष्य या कोई प्रचारक आकर हम से यों कहता है कि उद्धार पाने के लिये विश्वास करने की तो आवश्यकता है परन्तु बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है, तो हम जानते हैं, कि वह मनुष्य झूठ बोल रहा है। क्योंकि बाइबल में यीशु मसीह ने स्वयं कहा है कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६ : १६)।

मित्रो, बाइबल में परमेश्वर ने हमें अपनी सम्पूर्ण इच्छा दी है। हमें चाहिए कि हम परमेश्वर के वचन को ही मानकर चलें। क्योंकि परमेश्वर का वचन न्याय के दिन उन सब लोगों को दोषी ठहराएगा जो उसमें कुछ भी बढ़ाते हैं या उसमें से घटाते हैं या उसमें कुछ भी बदलते हैं (प्रकाशितवाक्य २२ : १८, १९)। परन्तु जो उसके वचन को पढ़ते हैं और सुनते हैं और उस पर चलते हैं वे परमेश्वर की ओर से आशीष पाएंगे।

दो प्रकार के विश्वास

मित्रो :

मैं इस बहुमूल्य अवसर के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। वास्तव में यह अवसर बड़ा ही कीमती है, क्योंकि इस समय हम किसी प्रकार के मनोरंजन के लिये एकत्रित नहीं हुए हैं परन्तु हम में से हर एक उन बातों को सुनने के लिये तैयार है जिनका सम्बन्ध हमारी आत्मा और अनन्तकाल से है। यह हमारे बाइबल अध्ययन का समय है। बाइबल हमारे परमेश्वर का वचन है। इस पुस्तक के द्वारा हमारा परमेश्वर हम से बातें करता है। इस पुस्तक में लिखी बातों के द्वारा हमारा परमेश्वर हमें बताना चाहता है, कि मनुष्य वास्तव में क्या है; उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता क्या है; और किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा पर चलकर वह अपने जीवन को सफ़ल बना सकता है। परमेश्वर आज अपनी इच्छा या अपने वचन को किसी भी मनुष्य पर व्यक्तिगत रुप से प्रगट नहीं कर रहा है। परन्तु उसने अपनी सम्पूर्ण इच्छा को हमेशा के लिये मनुष्य पर बाइबल के द्वारा प्रगट कर दिया है। इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर और मनुष्य के विषय में जो कुछ भी जानना चाहते हैं वह सब हमें बाइबल में मिलता है। यह पुस्तक जगत के अन्त तक मनुष्य के लिये परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन है। इस जीवन में परमेश्वर ने इस पुस्तक को हमें दिया है, और न्याय के दिन इसी पुस्तक में लिखी बातों के द्वारा वह हम सब का न्याय करेगा। इसलिये बाइबल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। यही कारण है कि हम बार-बार आपका ध्यान इस पुस्तक में लिखी बातों के ऊपर दिलाते हैं। और आपको चाहिए: कि यदि आप पढ़ सकते

हैं, तो आप स्वयं भी बाइबल का अध्ययन करें। यह पुस्तक आप को आपकी भाषा में बड़े ही सस्ते दाम पर मिल सकती है। याद रखें, कि इस पुस्तक में परमेश्वर का वचन लिखा हुआ है, और हमारे लिये यह एक कितनी बड़ी आशीष की बात है कि हम उसके वचन की पुस्तक को अपने घर में रख सकते हैं और उसे पढ़ सकते हैं।

बाइबल का एक बड़ा ही मुख्य विषय है विश्वास। बाइबल कहती कि विश्वास के बिना हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (इब्रानियों ११:६), और एक अन्य स्थान पर इस पुस्तक में लिखा है कि यदि हम परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास लाएंगे तो हम नाश न होंगे परन्तु अनन्त जीवन पाएंगे। (यूहन्ना ३:१६)। अर्थात्, विश्वास, बाइबल के अनुसार एक बड़ा ही महत्वपूर्ण और विशेष सिद्धांत है। परन्तु क्या आप जानते हैं कि बाइबल में हमें दो प्रकार के विश्वास के सम्बन्ध में मिलता है? बाइबल हमें बताती है कि एक विश्वास वह है, जो मरा हुआ है, और दूसरा विश्वास वह है, जो जिन्दा है। सो आईये इस सम्बन्ध में हम अपनी बाइबल में से याकूब की पुस्तक को निकालकर पढ़ें। यहां हम इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में से इस प्रकार पढ़ते हैं: "हे मेरे भाईयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो: तो उस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? यदि कोई भाई या बहिन नंगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो, और तुम में से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिये आवश्यक हैं वह उन्हें न दें, तो क्या लाभ? वैसे ही विश्वास भी यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। बरन कोई कह सकता है कि तुझे विश्वास है, और मैं कर्म करता हूं: तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाउंगा।

तुझे विश्वास है, कि एक ही परमेश्वर है : तू अच्छा करता है: दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं। पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है ? जब हमारे पिता इब्राहीम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों से धार्मिक न ठहरा था। सो तू ने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ। और पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, कि इब्राहीम ने परमेश्वर की प्रतीति की, और यह उसके लिये धर्म गिना गया और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। सो तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं बरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है। वैसे ही राहाब वेश्या भी जब उसने दूतों को अपने घर में उतारा: और दूसरे मार्ग से विदा किया, तो क्या कर्मों से धार्मिक न ठहरी ? निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" (याकूब २:१४—२६)।

सो हम देखते हैं, कि बाइबल हमें दो तरह के विश्वास के बारे में बताती है, अर्थात एक मरा हुआ विश्वास और एक ज़िन्दा विश्वास। मरा हुआ विश्वास वह है जो कर्म-रहित है, और ज़िन्दा विश्वास वह है जो कर्म-सहित है। क्या आप परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं ? किस प्रकार का विश्वास आप उसके भीतर रखते हैं ? क्या आप का विश्वास परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में है ? किस प्रकार का विश्वास आप उसमें रखते हैं ?

बाइबल के पुराने नियम में हम एक जगह नामान नाम के एक मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं। नामान के पास धन और मान तो बहुतायत से था परन्तु वह एक कोढ़ी था। जब वह कहीं भी चंगाई प्राप्त न कर सका, तो उसे परमेश्वर के एक जन के बारे में पता चला। जब

नामान ने परमेश्वर के उस जन के बारे में सुना और उसे बताया गया कि वह अवश्य ही उसे चंगा कर सकता है, तो वह बड़ा ही प्रसन्न हुआ। और वह बहुत सा दान और सामान अपने साथ लेकर परमेश्वर के उस जन से मिलने को चल पड़ा। नामान को पूरा विश्वास था कि अब वह चंगा होकर ही वापस लौटेगा। परन्तु जब वह उस परमेश्वर के जन के पास पहुंचा तो उसने अपने एक दूत के हाथ नामान को यह कहला भेजा कि तू जाकर यरदन नदी में डुबकी लगा तो तू शुद्ध हो जाएगा। क्या नामान ने उसकी बात मानी ? जी नहीं। बाइबल में लिखा है, कि नामान यह बात सुनकर क्रोध में भरकर वहां से लौट कर चला गया। नामान को विश्वास था, परन्तु उसका विश्वास मरा हुआ था, क्योंकि उसने परमेश्वर के जन की आज्ञा को मानने से इंकार कर दिया। नामान का विश्वास खोखला था, क्योंकि उसके विश्वास में भरोसा नहीं था। (२ राजा ५)।

किन्तु, फिर बाइबल के नए नियम में हम एक और मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं। लिखा है, कि यह मनुष्य जन्म से ही अन्धा था। परन्तु जब प्रभु यीशु ने उस मनुष्य को देखा, तो प्रभु ने भूमि पर थूककर मिट्टी सानी और उस मिट्टी को उस अन्धे की आंखों पर लगाकर यीशु ने उसे आज्ञा देकर कहा, कि अपनी आंखों को पास में बने कुन्ड के पानी से धो ले। बाइबल कहती है, कि यीशु की आज्ञा सुनते ही उस मनुष्य ने तुरन्त अपनी आंखों को धो डाला। सो तब क्या हुआ ? लिखा है, कि वह जन्म का अन्धा तत्काल देखने लगा। यह है ज़िंदा विश्वास, एक ऐसा विश्वास जिसके भीतर भरोसा है; एक कामिल या सिद्ध विश्वास। जिसके भीतर कोई प्रश्न या कोई संदेह नहीं है। और वास्तव में, ऐसे ही विश्वास की आज हम में से हर एक को आवश्यकता है। हमें आवश्यकता है एक निश्चय तथा भरोसेवाले विश्वास की। बाइबल कहती है, कि विश्वास के बिना

हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते; बाइबल कहती है, कि विश्वास के बिना हम उद्धार नहीं पा सकते। परन्तु किस प्रकार के विश्वास के बिना ? वह विश्वास जो ज़िन्दा है; वह जो केवल शब्दों का नहीं परन्तु काम के साथ है। इसी कारण प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, कि जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, क्यों कहते हो ? (लूका ६ : ४६)।

मित्रो, परमेश्वर के अनुग्रह से उसका पुत्र यीशु हम सबके पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया। परन्तु प्रभु यीशु ने आज्ञा देकर कहा है, कि जो मनुष्य उसमें विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा (मरकुस १६ : १६; इब्रानियों ५ : ८, ९)। क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं ? यदि आप उसमें वास्तव में विश्वास करते हैं, तो आप उसकी आज्ञा मानकर पानी के भीतर बपतिस्मा लेंगे। (यूहन्ना ३ : ५; प्रेरितों ८ : ३८; १० : ४७)।

यदि इस सम्बन्ध में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं तो हमारे पते पर लिखकर हमें सूचित करें।

अब इस कार्यक्रम का समय समाप्त हुआ चाहता है, सो मैं आपसे आज्ञा चाहूंगा।

यीशु क्यों आया ?

मित्रो :

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व पलस्तीन देश में एक बालक का जन्म हुआ था। उस बालक का नाम यीशु था। निश्चय ही, आपने यीशु के बारे में सुना है, आपने उसके बारे में पढ़ा है। मेरा विश्वास है, कि आपने यीशु के जन्म की अद्‌भुत कथा को सुना है। मैं यह भी विश्वास करता हूं कि आपने यीशु की शिक्षाओं को और उसके अद्‌भुत उपदेशों को सुना है। यीशु ने इस पृथ्वी पर बड़े-बड़े अद्‌भुत काम किए; उसने लोगों को अपने स्पर्श से छूकर और अपनी जुबान से कहकर चंगाई दी; उसने आश्चर्य के काम किये और मुर्दों को जिलाया, मेरा विश्वास है कि आप इन बातों से परिचित हैं। फिर मेरा यह भी विश्वास है, कि आपने क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बारे में और मुर्दों में से उसके जिलाए जाने के बारे में भी अवश्य ही सुना है। परन्तु आज मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं, कि यीशु क्यों आया, अर्थात् वह इस जगत में क्यों आया ?

सबसे पहिली बात इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि यीशु इस जगत में यह प्रमाणित करने के लिए आया कि मनुष्य वास्तव में पृथ्वी पर एक धर्मी जीवन व्यतीत कर सकता है। यीशु जब इस पृथ्वी पर आया, तो वह एक मनुष्य के समान होकर आया। वह एक स्वर्गदूत की नाईं या एक ईश्वरीय देह में होकर पृथ्वी पर नहीं आया। परन्तु वह पूर्ण रूप से मनुष्य की नाईं मनुष्य की देह लेकर आया। शारीरिक रूप से वह एक आम इन्सान की तरह था। उसे

हमारी तरह थकावट का अनुभव होता था; उसे हमारी तरह भोजन की और नींद की आवश्यकता होती थी। बाइबल में एक जगह लिखा है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:५—८)। यानि आदि में यीशु परमेश्वर के साथ था, वह परमेश्वर का स्वरूप और परमेश्वर था, क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि वह उस समय परमेश्वर का वचन था। परन्तु मनुष्य के उद्धार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उसने अपने आपको खाली कर दिया, अर्थात् वह रुतबा, वह ओहदा जो उसे आदि से परमेश्वर के साथ प्राप्त था, उसने उसे छोड़ दिया। और वह इन्सान की समानता में हो गया और एक मनुष्य बनकर प्रगट हुआ। लेकिन सबसे बड़ी बात जो हम यीशु के जीवन में देखते हैं वह यह है, कि उसका एक सिद्ध जीवन था। उसके जीवन में एक भी पाप नहीं था। हम संसार के इतिहास के पन्ने पलट-पलटकर उन सब मनुष्यों के जीवनों के बारे में देख सकते हैं जिनका इतिहास में कहीं पर भी वर्णन हुआ है। परन्तु उनमें से एक भी मनुष्य हमें ऐसा नहीं मिलेगा जिसका जीवन पूरी तरह से पाप-रहित था, जिसने अपने जीवन में कभी कोई पाप नहीं किया। किन्तु यीशु का जीवन सिद्ध था, अर्थात् उसमें एक भी पाप नहीं था। पवित्र बाइबल कहती है, कि; "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।" (१ पतरस २ : २२)।

अकसर हमारे सामने तरह-तरह के लालच आते हैं, विभिन्न

परीक्षाएं आती हैं, और हम कहते हैं कि पाप करना तो मनुष्य का स्वभाव है। हम सोचते हैं कि मनुष्य पाप किए बिना रह ही नहीं सकता। परन्तु यीशु एक मनुष्य था, और हमारी ही तरह उसके सामने भी हर प्रकार के लालच आए, नाना प्रकार की परीक्षाएं आईं, परन्तु तौभी उसने कभी कोई पाप नहीं किया। बाइबल एक जगह यीशु को सम्बोधित करके कहती है, "सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रानियों ४:१४, १५)। मित्रो, मनुष्य के सामने आज ऐसी कोई परीक्षा नहीं है, ऐसा कोई दुःख या संकट नहीं है जिससे होकर यीशु स्वयं न गुज़रा हो। उसे अभाव था, घटी थी, उसके सामने लालच थे परीक्षाएं थीं, वह सब बातों में हमारी नाईं परखा गया। परन्तु वह निष्पाप निकला। उसने अपने जीवन से पृथ्वी पर यह प्रमाणित कर दिया कि मनुष्य एक पाप-रहित तथा धर्मी जीवन व्यतीत कर सकता है। क्या आज आपके सामने लालच हैं? क्या आज आपके सामने परीक्षाएं हैं? क्या आपके सामने बुराई है? सोचिए, कि यदि आज यीशु आपकी स्थिति में आपके स्थान पर होता तो वह क्या करता? यीशु के पीछे हो लेने का अर्थ यही है। उसके आदर्श पर चलने का अभिप्राय यही है। यीशु का अनुसरण करने का मतलब यही है। क्योंकि यीशु में होकर, यीशु के द्वारा हम हर एक बुराई और परीक्षा के ऊपर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

परन्तु न केवल यीशु यह ही प्रमाणित करने को पृथ्वी पर आया कि मनुष्य पृथ्वी पर धर्मी जीवन व्यतीत कर सकता है। किन्तु उसने

पृथ्वी पर आकर यह भी प्रमाणित कर दिया कि परमेश्वर वास्तव में प्रेम है। आज हम न केवल यह कह सकते हैं कि परमेश्वर प्रेम है, परन्तु हम जानते हैं कि परमेश्वर प्रेम है। क्योंकि उसने जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। इसीलिये बाइबल एक जगह हमें बताती है, कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा" (यूहन्ना ३ : १६), अर्थात एक अनोखा, एक निराला, और एक महान् प्रेम रखा।

परमेश्वर मनुष्य से प्रेम रखता है परन्तु वह पाप से घृणा करता है। मनुष्य परमेश्वर से प्रार्थना करता है, उसकी आराधना करता है, उसे भेंट चढ़ाता है। परन्तु वह इस बात को महसूस नहीं करता और इस सच्चाई पर ध्यान नहीं देता, कि पाप के कारण वह परमेश्वर के सम्मुख नहीं आ सकता। क्योंकि पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है उस से दूर है। पाप के कारण परमेश्वर का मुंह मनुष्य से छिपा है, न वह उसे देखता है और न उसकी सुनता है। इसलिये नहीं कि वह मनुष्य से बैर रखता है परन्तु क्योंकि वह पाप से घृणा करता है। (यशायाह ५९ : १, २) लेकिन बाइबल हमें बताती है, कि यीशु पाप को उठा ले जाने के लिये जगत में आया (यूहन्ना १ : २९)। वह उस दीवार को नष्ट करने के लिये और उस कारण को बीच में से हटा देने के लिये आया जो मनुष्य को परमेश्वर से मिलने को रोकता है। इसीलिए बाइबल एक जगह यीशु को सम्बोधित करके कहती है, कि वह हमारा मेल है। (इफिसियों २ : १४)। और एक दूसरी जगह बाइबल में यीशु के बारे में यों लिखा है, कि वह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक बिचवई है। (१ तीमुथियुस २ : ५)। क्योंकि यीशु परमेश्वर की मनसा और उसकी इच्छा से सारे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस के ऊपर लटकाया गया। बाइबल कहती है कि यीशु हम सबके पापों

का प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना ४ : १०)। परमेश्वर ने यीशु को हम सबके पापों के लिये एक बलिदान ठहराया, अर्थात् उसने जगत के सारे पापों के कारण यीशु को क्रूस के उपर बलिदान किया। बाइबल में लिखा है, कि जो पाप से अज्ञात था उसी को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम यीशु में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। यानि यीशु ने पृथ्वी पर आकर अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया, उसने अलग करनेवाली दीवार को नष्ट कर दिया, उसने उस कारण को बीच में से हटा दिया जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक बैर के समान था। इसलिये आज हम यीशु के द्वारा अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं। सबसे पहले, बाइबल में लिखा है, कि हमें चाहिए कि हम यीशु में यह विश्वास करें कि वह परमेश्वर का पुत्र है और वह हमारे पापों के कारण क्रूस पर मारा गया। फिर हमें चाहिए कि हम अपने सब पापों से मन फिराएं, और फिर अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें, अर्थात् अपने वर्तमान मनुष्य या जीवन को बपतिस्मे के द्वारा पानी की कब्र के भीतर गाड़ दें। (यूहन्ना : ३ : १६; प्रेरितों २:३८; ८ : ३५-३६; कुलुस्सियों २ : १२)।

मित्रो, बाइबल हमें यह भी बताती है, कि यीशु एक बार फिर से वापस आएगा। परन्तु अब की बार न तो वह जगत में रहने को आएगा और न जगत का उद्धार करने को। इस बार वह जगत के लोगों का न्याय करने को आएगा। (प्रेरितों १७ : ३०, ३१)।

क्या आप न्याय के दिन उस से मिलने को तैयार हैं? क्या आपने परमेश्वर की इच्छा को मान लिया है?

"और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा...."

मित्रो :

यह कार्यक्रम प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का कार्यक्रम है। पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य के जीवन से जगत इतना अधिक प्रभावित नहीं हुआ या उसमें ऐसा बड़ा परिवर्तन नहीं आया, जैसा कि यीशु की मृत्यु के कारण हुआ। यीशु की मृत्यु ने सारे संसार के इतिहास को बदल डाला। यदि आज हम तीन हज़ार साल पुरानी किसी बात के ऊपर विचार करते हैं तो हम एक हज़ार ई०पू० कहते हैं, अर्थात् यीशु मसीह से एक हज़ार साल पहिले। और यदि आज हम वर्तमान की बात करते हैं, तो हम कहते हैं ईस्वी सन् १९८२। जब यीशु इस पृथ्वी पर था, तो एक जगह उसने कहा था, कि, "जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए।" "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा।" (यूहन्ना ३ : १४, १५; १२ : ३२)।

मित्रो, हम जीवन से प्रेम करते हैं, हम जीवन को महत्व देते हैं, हम जीवन की बातें करते हैं, परन्तु परमेश्वर हमें अपनी पुस्तक बाइबल में मृत्यु का समाचार देता है। और वास्तव में परमेश्वर जिस मृत्यु का समाचार हमें देता है वह हमारे लिये एक सुसमाचार है; वह हमारे लिये एक खुश-ख़बरी है। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि

उसका पुत्र यीशु क्रूस पर इसलिये चढ़ाया गया ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। प्रभु यीशु ने एक बार इस प्रकार कहा था, "चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने के लिये आता हूं। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।" (यूहन्ना १० : १०)। और वह जीवन हमें यीशु की मृत्यु में मिलता है। वास्तव में जीवन के लिये मृत्यु आवश्यक है। जिस रोटी को खाकर हम जीवित रहते हैं वह हमें अन्न के उन दानों से प्राप्त होती है जो हमें जीवन देने के लिये पिस जाते हैं। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, "जीवन की रोटी जो स्वर्ग उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा वह मेरा मांस है।" (यूहन्ना ६ : ५१)।

यीशु की मृत्यु एक अचानक या आकस्मात घटना नहीं थी, यह कोई ऐसी बात नहीं थी जिसके बारे में परमेश्वर ने बहुत बाद में योजना बनाई, परन्तु वह परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार और उसकी पहिले से ठहराई मनसा के अनुसार क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया। (प्रेरितों २ : २३)। यीशु का मरना आवश्यक था क्योंकि जगत में पाप था। पाप के कारण सारा जगत परमेश्वर से दूर था। पाप की मजदूरी, बाइबल कहती है, मृत्यु है (रोमियों ६ : २३), और मृत्यु का अर्थ है जीवन से अलग होना। पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य उस जीवन से अलग था जो मनुष्य को केवल परमेश्वर से ही मिल सकता है। परन्तु यीशु परमेश्वर का पुत्र है। पृथ्वी पर जन्म लेने से पहिले वह परमेश्वर के साथ था। बाइबल कहती है कि वह

एक मनुष्य बनने से पहिले परमेश्वर का वचन था, और वह परमेश्वर के साथ था, और वह परमेश्वर था। किन्तु मनुष्य को जीवन देने के लिये वह परमेश्वर का पुत्र बनकर जगत पर प्रगट हुआ। (यूहन्ना १ : १—३, १४)। परन्तु वह मरने के लिये प्रगट हुआ। बाइबल में लिखा है, "पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे।" (इब्रानियों २ : ९)। क्यों ? ताकि जगत के पापों का उसकी मृत्यु के द्वारा प्रायश्चित हो जाए। बाइबल का लेखक एक स्थान पर इस प्रकार कहता है, "हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है : और केवल हमारे ही नहीं, बरन सारे जगत के पापों का भी।" (१ यूहन्ना २ : १—२)। और फिर एक अन्य स्थान पर बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं, "कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आना-कानी की; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।" (रोमियों ३ : २३—२५)।

इसलिये, यीशु की मृत्यु के कारण अब हम परमेश्वर के पास आ सकते हैं। हम यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं। क्योंकि उसने अपने बलिदान के द्वारा हमारे पापों का प्रायश्चित करके हमारे सामने उस द्वार को खोल दिया है जो हमारे पापों के

कारण बन्द था। पवित्र बाइबल में लिखा है, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें·····क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे।" (रोमियों ५ : १, १०)। यहां हम दो बातें देखते हैं, अर्थात् पहिले तो यह, कि यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल हुआ। और दूसरे यह, कि उसके मुर्दों में से जी उठने के कारण हमें यह आशा मिली कि हम उसके द्वारा उद्धार पाएंगे। परन्तु यीशु की मृत्यु से हम एक और ख़ास बात यह देखते हैं, कि उसके बलिदान के द्वारा परमेश्वर ने अपने प्रेम तथा न्याय दोनों को सिद्ध किया। अकसर कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर यदि प्रेम है तो वह सबका उद्धार क्यों नहीं करता। परन्तु मित्रो, परमेश्वर केवल प्रेम ही नहीं है वह धर्मी भी है। धर्मी से मेरा अर्थ है, कि वह पवित्र है और न तो उसमें कोई बुराई है और न ही वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संगति रख सकता है जिसमें बुराई या पाप है। सो यदि परमेश्वर अपने प्रेम के कारण सबको उद्धार दे दे तो इसका अर्थ यह होगा कि उस की संगति में सब प्रकार के पापी तथा अधर्मी सम्मिलित होंगे। क्योंकि उद्धार पाने का अर्थ है परमेश्वर के साथ मेल करना, उसकी संगति में वापस आना। सो जहां परमेश्वर का प्रेमी स्वभाव मनुष्य को बचाना चाहता है, वहां उसका धर्मी स्वभाव उसे ऐसा करने से रोकता है, क्योंकि मनुष्य के भीतर पाप है। परन्तु क्रूस पर अपने पुत्र यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने इस जटिल समस्या को हल कर दिया। पवित्र बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर ने यीशु को सारे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर बलिदान कर दिया (१ यूहन्ना ४ : १०)। उसने बलिदान के लिये किसी मनुष्य के पुत्र को नहीं चुना। वास्तव में ऐसा

असम्भव था क्योंकि पापियों के लिये एक पापी के बलिदान की नहीं परन्तु एक धर्मी के बलिदान की आवश्यकता थी। लेकिन यदि ऐसा सम्भव भी होता तौभी आज लोग कदाचित उसे एक अन्यायी और निर्दयी कहकर सम्बोन्धित करते। परन्तु नहीं, परमेश्वर ने स्वयं अपने ही एकलौते पुत्र का बलिदान दिया। उसने अपने वचन को अपनी सामर्थ से मनुष्य बनाकर जगत में भेजा और अपने होनहार के ज्ञान से उसे क्रूस पर चढ़वाकर जगत के पापों के लिये बलिदान किया। इसलिये परमेश्वर की बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा है, कि हम, "उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।" क्योंकि "उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आना-कानी की उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो, कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।" (रोमियों ३ : २४—२६)।

मित्रो, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसके प्रेम के कारण उसका पुत्र यीशु मसीह हम सब के पापों के प्रायश्चित के लिये मर गया। हम धर्मी नहीं हैं, परन्तु यीशु की मृत्यु के कारण परमेश्वर उसमें हमें धर्मी ठहराता है। बाइबल में लिखा है, कि जब हम यीशु में विश्वास लाते हैं और अपना मन फिराते हैं और अपने सब पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा लेते हैं, तो हमारे विश्वास और आज्ञा मानने के कारण परमेश्वर हमें यीशु में धर्मी ठहराता है, अर्थात वह हमारे सब पापों को क्षमा करके हमें अपनी संगति में स्वीकार करता

है। (यूहन्ना ३ : १६; प्रेरितों २ : ३८; ८ : ३५—३९; इब्रानियों ५ : ८, ९)।

मित्रो, मनुष्य के लिये इससे बढ़कर खुशी की और कोई बात नहीं हो सकती कि उसे इस बात का निश्चय हो जाए कि वह अपनी मृत्यु के पश्चात इस जीवन से छूटकर परमेश्वर के उस नगर में प्रवेश करेगा जहां अनन्त संतोष और अनन्त आनन्द है और जहां अनन्त छुटकारा और अनन्त जीवन है, और यह सब कुछ हमें मसीह में मिलता है। क्या आप मसीह में हैं ? (गलतियों ३ : २७; रोमियों ८ : १)।

मसीही जीवन

मित्रो:

प्रभु यीशु मसीह को संसार में भेजकर परमेश्वर ने मनुष्य को एक ऐसा मार्ग दिया है जिसके ऊपर चलकर न केवल मनुष्य परमेश्वर के पास पहुंच सकता है, परन्तु जिस पर चलकर मनुष्य एक अच्छा इन्सान और जगत के लिये ज्योति के समान बन सकता है। प्रभु यीशु ने बाइबल में एक जगह कहा, "तुम पृथ्वी के नमक हो, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा ? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वह तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" (मत्ती ५ : १३-१६)।

यीशु को पृथ्वी पर भेजकर परमेश्वर ने जगत के ऊपर अपने अनुग्रह को प्रगट किया है। मनुष्य पापी है, और पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है, वह अपने पापों में मरा हुआ है। परन्तु अपने पुत्र यीशु को परमेश्वर ने जगत में इसलिये भेजा ताकि क्रूस के ऊपर उसकी मृत्यु के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित हो जाए, और मनुष्य परमेश्वर के साथ अपना मेल करने के योग्य बन जाए।

यदि जगत में पाप न होता तो परमेश्वर के वचन को देहधारी होकर मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसलिये पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है, "सो हम क्या कहें ? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो ? कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं ?" अर्थात्, मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह पाप के कारण हुआ, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम और पाप करें ताकि अनुग्रह बहुत अधिक हो। पर अनुग्रह इसलिये हुआ ताकि हम पाप से छूटकर धार्मिकता का जीवन बिताएं। क्योंकि, वह कहता है, कि हम पाप के लिये मर गए। परन्तु किस प्रकार ? मनुष्य पाप के लिये मरके धार्मिकता के लिये किस प्रकार जीवन व्यतीत कर सकता है? सो परमेश्वर का प्रेरित उसके वचन की पुस्तक में आगे कहता है, कि, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मुर्दों में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उस के साथ जुट गए हैं तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।" (रोमियों ६ : ३-५)। सो बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु की समानता में उसके साथ एक हो जाता है। और यदि बपतिस्मा लेने के द्वारा हम पानी की कब्र के भीतर उसके साथ गाड़े गए हैं, तो उस पानी में से बाहर आकर हम उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ एक हो जाते हैं। बाइबल कहती है, कि इस प्रकार मनुष्य मसीह के भीतर आ जाता है, (गलतियों ३:२७), वह एक नई सृष्टि बन जाता है (२ कुरिन्थियों ५:१७)। इसीलिये प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, (मरकुस १६ : १६), और एक अन्य

स्थान पर उसने कहा, कि, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना ३ : ५)। यह परमेश्वर का मार्ग है । यह परमेश्वर की इच्छा है, और वह चाहता है कि जगत में प्रत्येक मनुष्य, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, उसकी इच्छा पर चलकर अपनी आत्मा को पाप से बचाए।

पृथ्वी पर जिन लोगों ने परमेश्वर कि इस इच्छा का पालन किया है, उन्हें उस का वचन स्मरण कराकर कहता है : "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे.....सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह, जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे। इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है। इन्हीं के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता है। और तुम भी, जब इन बुराईयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। पर अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता

जाता है। उसमें न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न खतना-रहित, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र : केवल मसीह सब कुछ और सब में है। इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाइ जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो : जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सबके ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है, बान्ध लो। और मसीह की शान्ति जिसके लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो। मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों २ : १२; ३ : १-१७)।

मित्रो, परमेश्वर ने आपके लिये अपनी इच्छा को अपनी पुस्तक बाइबल में प्रगट किया है। वह चाहता है कि पृथ्वी पर सारे लोग उसकी इच्छा को जानें, और उस की आज्ञा पर चलकर उसके साथ अपना मेल कर लें। उसने मनुष्य को अपना एक सिद्ध मार्ग दिया है। उसे आप की चिन्ता है, और न केवल उसे आप के शरीर की ही परन्तु उससे अधिक उसे आपकी आत्मा की चिन्ता है। वह चाहता है, कि आप उसके साथ अपना मेल कर लें ताकि आपकी आत्मा नाश होने से बच जाए। पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से अलग है। परन्तु हम अपने विचार या अपने विश्वास या अपने धर्म का पालन

करके परमेश्वर के पास वापस नहीं आ सकते। हमें चाहिए कि हम सब उस एक मात्र सिद्ध मार्ग को स्वीकार करें जिसे परमेश्वर ने हम सबके लिये स्वर्ग से प्रगट किया है। यीशु मसीह सब मनुष्यों के लिये परमेश्वर का बरदान है। परमेश्वर ने उसे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये दे दिया। उसकी मृत्यु परमेश्वर की इच्छा से हमारे लिये जीवन का कारण बनी। इसलिये जब हम मसीह पर विश्वास लाते हैं, और अपने सब पापों से मन फिराते हैं और उनकी क्षमा प्राप्त करने के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेते हैं, तो हम उसकी मृत्यु के कारण अपने पापों से उद्धार पाते हैं। इसलिये नहीं कि हमने कुछ किया है, परन्तु यीशु की मृत्यु के कारण, क्योंकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। परन्तु उसकी इच्छा का पालन करने के कारण न केवल हम अपनी आत्मा को आनेवाले जीवन के लिये ही तैयार करते हैं, किन्तु यह जानते हुए कि हमने अपने पुराने मनुष्यत्व से मन फिरा लिया है, और उसे बपतिस्मा लेकर गाड़ दिया है, हम मसीह में एक नए जीवन का आरम्भ करते हैं। वह जीवन जो ज्योति के समान है। जो सबको प्रकाशित और स्वादिष्ट करता है, जो सब को मार्ग दिखाता और बचाता है। वास्तव में, परमेश्वर के बरदान को तुच्छ समझकर आज कितने ही लोग उन सब आशीषों से बंचित हैं जो आज उनकी हो सकती हैं। परन्तु मेरा विश्वास है कि आप इन सब बातों के ऊपर पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे, और परमेश्वर की इच्छा को मानकर उसके बरदान को स्वीकार करेंगे।

प्रभु आप सब को आशीष दे।

अधिकार की आवश्यकता

मित्रो :

मेरी आशा है कि अब इस थोड़े से समय में हम जिन बातों के ऊपर विचार करने जा रहे हैं आप उन्हें बड़ी ही गम्भीरता के साथ सुनेंगे। पृथ्वी पर मनुष्यों में व्यवस्था बनाए रखने के लिए अधिकार का एक बड़ा ही विशेष महत्व है। हमें पुलिस तथा सेना की आवश्यकता है। हमें अपने देश में एक प्रधानमंत्री या एक राष्ट्रपति की आवश्यकता है, अलग-अलग प्रान्तों में मुख्यमंत्रियों की आवश्यकता है। इसी प्रकार प्रत्येक दफ्तर या कारखाने में एक बड़े अधिकारी की आवश्यकता होती है। और ऐसे ही हमारे परिवारों में पिता एक अधिकारी के समान होता है, वह घर का बड़ा या मुखिया होता है। वास्तव में, यदि इस प्रकार के अधिकार पृथ्वी पर न हों तो हमारे बीच बड़ी ही अव्यवस्था तथा गड़बड़ी की हालत हो जाएगी, अर्थात् अधिकार मनुष्यों की भलाई के लिए हैं। हमें नापने के लिये मीटर या लीटर की आवश्यकता है। हमें तौलने के लिए सेर या किलो की आवश्यकता है। हम अनुमान से नहीं चल सकते, हमें एक अधिकार की आवश्यकता है। जब हमारे परिवार में कोई बीमार पड़ जाता है, तो हम उसका इलाज करवाने के लिये उसे डॉक्टर के पास ले जाते हैं। हम डॉक्टर से पूछते हैं कि उस मरीज को क्या दवाई देनी है, कितनी बार देनी है, उसे क्या खाना देना है, और हम पूरी ख़बरदारी के साथ उन सब बातों का पालन करते हैं जिनका आदेश हमें डॉक्टर की ओर से मिलता है। परन्तु मान लीजिए, बीमारी के सम्बन्ध में हम डॉक्टर की बात मानने से इन्कार कर दें ? ऐसा करके हम स्वयं अपना ही

नुकसान करेंगे, हमें हानि उठानी पड़ेगी। क्योंकि रोग के सम्बन्ध में डॉक्टर एक अधिकार है। सो हर एक जगह हमें अधिकार की आवश्यकता है। अधिकार मानवता की भलाई के लिए हैं। पवित्र बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इससे जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करनेवाले दण्ड पाएंगे। क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिए डर का कारण है; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी; क्योंकि वह तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिये हुए नहीं और परमेश्वर का सेवक है; कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करने वाले को दन्ड दे। इसलिये आधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, बरन विवेक भी यही गवाही देता है।" (रोमियों १३.१—५)।

किन्तु मनुष्य को अधिकार की आवश्यकता न केवल सांसारिक दृष्टिकोण से ही है परन्तु आत्मिक या धार्मिक रूप से भी है। यद्यपि की हम सबका एक ही परमेश्वर है, परन्तु फिर भी धार्मिक दृष्टिकोण से आज संसार में एक बड़ी फूट का दृश्य है। सभी लोग एक ही परमेश्वर की उपासना करना चाहते हैं; एक ही परमेश्वर के पास पहुंचना चाहते हैं; एक स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं; और एक ही उद्धार को प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु सबके मार्ग भिन्न हैं; सबके अनुमान अलग-अलग हैं; और सबकी विधियां एक दूसरे की विरोधी हैं। और इस सब अव्यवस्था तथा फूट का केवल एक ही कारण है, अर्थात्

हमने एक साथ मिलकर उस धार्मिक अधिकार को स्वीकार नहीं किया है जो हमें परमेश्वर ने दिया है। न केवल संसार में अनेक धर्म हैं परन्तु प्रत्येक धर्म में अनेकों सम्प्रदाय हैं, और उनमें से हर एक का केवल एक ही उद्देश्य है, अर्थात् एक परमेश्वर के पास पहुंचना, उसके स्वर्ग में प्रवेश पाना, और अनन्त जीवन या उद्धार को प्राप्त करना। परन्तु क्या यह संभव है ? क्या परमेश्वर ने हमें बताया है, कि हम उसके पास कुछ भी करके और किसी भी मार्ग से होकर पहुंच सकते हैं ? आप मेरा नाम जानते हैं, परन्तु आप मेरे घर बिना मार्ग के ज्ञान के नहीं पहुंच सकते। और मेरे घर का मार्ग आप केवल दो ही तरह से मालूम कर सकते हैं, अर्थात् या तो मैं स्वयं आपको बताऊं या जो मेरे घर में रहता है या कभी आ चुका है वह आपको मार्ग बताए। और कोई अन्य उपाय नहीं है। सो क्या परमेश्वर ने हमें अपना मार्ग बताया है, क्या उसने हमें व्यक्तिगत रूप से अपने पास पहुंचने का रास्ता बताया है ? या क्या कोई मनुष्य परमेश्वर के पास से कभी लौटकर वापस आया है ?

मित्रो, परमेश्वर का मार्ग जानने का जगत में केवल एक ही उपाय है, अर्थात् परमेश्वर का एकलौता पुत्र यीशु मसीह। बाइबल नाम की जिस पुस्तक को परमेश्वर ने अपनी प्रेरणा से लिखवाकर मनुष्य को दिया है, उसमें परमेश्वर ने अपने उस मार्ग का वर्णन किया है जो हमें परमेश्वर के पास पहुंचा सकता है। यह पुस्तक हमें बताती है, कि परमेश्वर स्वयं अपने वचन के द्वारा मनुष्य की देह को अपने ऊपर लेकर पृथ्वी पर आ गया। अपनी सामर्थ से परमेश्वर ने अपने वचन को मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। (यूहन्ना १:१, १४)। इसी कारण पवित्र बाइबल में यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है। (यूहन्ना ३ : १६)। और इसीलिए यीशु ने एक जगह यूं कहा, कि, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं

ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। मनुष्य ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा, परन्तु यीशु ने कहा कि जिसने मुझे देखा है उसने परमेश्वर को देखा है। (यूहन्ना १४:९)। मनुष्य अपने प्रयत्नों से परमेश्वर तक नहीं पहुंच पाया, परन्तु परमेश्वर स्वयं इन्सानों के बीच आ गया। यीशु ने लोगों से कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७ : १३, १४)। इसलिये परमेश्वर के पास पहुंचने का केवल एक ही मार्ग है, जिसे उसने स्वयं दिया है, और प्रत्येक अन्य मार्ग उस चाकल मार्ग के समान है जो विनाश को पहुंचाता है। जिस प्रकार किलो तौल का अधिकार है, और मीटर नाप का अधिकार है, तथा एक डॉक्टर रोग का अधिकार है, उसी तरह परमेश्वर अनन्त जीवन के मार्ग का अधिकार है।

मार्ग का अर्थ है एक साधन या उपाय जिसके द्वारा हम अपने निश्चित स्थान तक पहुंच सकते हैं। उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह भी एक साधन है, एक उपाय है, जिसे हमें परमेश्वर ने दिया है ताकि हम उसके द्वारा अपने परमेश्वर के पास पहुंच सकें। इसीलिये पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को अपने ही होनहार के ज्ञान से क्रूस के ऊपर चढ़वाकर बलिदान करवाया। (प्रेरितों २ : २३)। यह कार्य परमेश्वर ने इसलिये किया जिससे कि जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित हो जाए और हम सब यीशु के बलिदान के कारण अपने-अपने पापों से छुटकारा पाकर उसके पास पहुंचने के योग्य बन जाएं। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने अपने प्रेम को जगत पर इस रीति से प्रगट किया कि जब हम सब

पापी ही थे तो उसका पुत्र मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियों ५:८)। और फिर हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : ९, १०)। फिर हम यह भी देखते हैं, कि जब यीशु अपनी मृत्यु के बाद फिर से जी उठा, तो बाइबल में लिखा है, कि यीशु ने अपने चेलों के पास आकर उनसे यू कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" क्योंकि, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मत्ती २८ : १८, १९; मरकुस १६ : १६)।

मित्रो, यदि मनुष्य परमेश्वर के पास पहुंचना चाहता है, यदि मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है, यदि मनुष्य अनन्त जीवन या उद्धार पाना चाहता है, तो उसे परमेश्वर के अधिकार को मानना ही होगा। परमेश्वर ने बाइबल, अर्थात् अपने वचन की पुस्तक को मनुष्य को दिया है। इस पुस्तक में प्रत्येक बात परमेश्वर के अधिकार से लिखी गई है। संसार का प्रत्येक मनुष्य गलत हो सकता है और प्रत्येक पुस्तक गलत हो सकती है, परन्तु परमेश्वर का वचन कभी गलत नहीं हो सकता। और यही बात हर एक अन्य वस्तु के लिये भी कही जा सकती है। अर्थात् मनुष्यों के धर्म गलत हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर का धर्म गलत नहीं हो सकता। मनुष्यों के उद्धार पाने के रास्ते गलत हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर का मार्ग

कभी गलत नहीं हो सकता है। मनुष्यों की बनाई हुई कलीसियाएं गलत हो सकती हैं, परन्तु उसकी कलीसिया गलत नहीं हो सकती। किस अधिकार से आज आप धार्मिक दृष्टिकोण से चल रहे हैं? मनुष्यों के बनाए धर्मोपदेश के द्वारा या परमेश्वर के अधिकार से?

मेरा विश्वास है, कि इस महत्वपूर्ण प्रश्न के ऊपर आप अवश्य ही विचार करेंगे। यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप को और अधिक जानकारी की आवश्यकता है, तो हमारे पते पर लिखकर हमें सूचित करें।

यदि आप यीशु में विश्वास नहीं करते, तो आप को चाहिए कि आप उसमें विश्वास करें। यदि आप उसमें विश्वास करते हैं तो आप को अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा लेना चाहिए। जब आप ऐसा करेंगे तो यीशु आपको अपनी कलीसिया, अर्थात् अपनी मन्डली में मिला लेगा। और जब आप उसके सुसमाचार को अन्य लोगों को देंगे और यदि वे भी सुनकर आपकी तरह उसकी आज्ञा का पालन करेंगे तो उन्हें भी प्रभु अपनी कलीसिया में मिला लेगा। इस प्रकार जहां आप हैं वहां मसीह की कलीसिया का आरम्भ हो जाएगा परमेश्वर आप को आशीष दे।